राष्ट्रीय द्वैमासिक मैथिली पत्रिका

फरवरी - मार्च 2014, वर्ष--2 अंक--4

RNI NO. DEL MAI/2012/45339

मिथिलांचल टुडे

(किछु कहब-किछु सुनब)

₹15

www.mithilanchaltoday.in

* ई हमर छी
* सबरंगी बात
* सगर राति दीप देवघरमे
* मिथिलांचल टुडेक मधुबनी कार्यालय

www.mithilanchaltoday.in

Doctor का सपना सच होगा अपना

Note : 100% Practical & NCERT

Dolphin Classes

BIOLOGY

For : NEET, AIIMS, XI &XII

By :-

V.K. Roy

(Youth Motivator)

Add.: Bhikhana Pahari, Saidpur More, Patna-4

Mob.: 9304046154, 9709373519

WWW. dolphinclasses.in

मिथिलांचल टुडे

(किछु कहब-किछु सुनब)

प्रधान संपादक :
डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

संपादक :
डॉ. किशन कारीगर
(मूल नाम - कृष्ण कुमार राय)

संपादकीय सलाहकार :
डॉ. शेफालिका वर्मा

संपादन सहयोग :
जगदानंद झा 'मनु'

डिजाईनिंग
राजीब रंजन मधुकर-**09718648171**

प्रसार प्रबंधक

* गंगानारायण झा(दिल्ली)
* राजकुमार यादव(दिल्ली)
* राहुल भारद्वाज (दिल्ली)
* बबलू मुखिया(दिल्ली)
* रामअवतार शर्मा(गाजियाबाद)
* प्रवीण कुमार शर्मा(गाजियाबाद)
* अनुराग ठाकुर(नोएडा)
* सत्येन्द्र कुमार(नोएडा)
* शिवनाथ यादव(मधुबनी)
* चुन्नु झा(मधुबनी)
* प्रभाकर झा (दरभंगा)
* संजय कुमार 'गुड्डू'(दरभंगा)
* करूणा झा(नेपाल)
* संजीव झा(सहरसा)
* पंकज झा(मुंबई)
* मनोज झा(छत्तीसगढ़)
* अनमोल झा(कोलकत्ता)
* शिव पुस्तक भंडार(पटना)
* वी के राय(पटना)

मिथिलांचल टुडेकेँ अधिन © सर्वाधिकार सुरक्षित :-

मुद्रिक, प्रकाशक, स्वामी एवं संपादक कृष्ण कुमार राय द्वारा दिव्या ऑफसेट प्रिंटर बी-१४२२ न्यू अशोक नगर नई दिल्ली-९६ सँ मुद्रित आ ५३० बाबा हरिदास नगर, नई दिल्ली-४१ सँ प्रकाशित। एहि अंकमे प्रकाशित आलेखसँ संपादकीय सहमति आवश्यक नहि। मिथिलांचल टुडे एहि लेल जिम्मेवार नहि होएत। कोनो प्रकारक विवादक फरिछौट दिल्ली न्यायालयकेँ अधिन होएत।

संपादिकीय कार्यालय

B-2/333,Tara nagar,old Palam Road Kakrola, Sec-15 Dwarka, New delhi-110078.(INDIA)
Phpnes : 011-6585937, 32670787
Fax : 011-253335034
Email : mithilanchaltoday12@gmail.com
Website : www.mihilanchaltoday

विषय.....

सम्पादकीय.....2

ई हमर अछि.....6

सबरंगी बात.....8

हैज्थ.....10

मधुबनी कार्यालय 26

□¨ , / ¸□ 30

सम्पादकीय

एकटा गप सदिखन धियान राखब।
मिथिलाक माटि पानिसँ स्नेह रखाब।।
सामाजिक आर्थिक उन्नति होएत कोना।
एहि लेल सार्थक काज टा करब।।

कविवर-किशन कारीगर

फगुआ अबिते मातर सब अपने ताले-अपने रंगमे रंगा जाइत अछि। कियो डंफा डूगडूगाबे, तँ कियो ढ़ोल बजाबे, रंग-अबीर आ झालि-मृदंगक संग। जेकरा देखिऔ तेकरे सब अपने रंगमे रंगाएल रहैत अछि, मुदा सबहक अंतरआत्मा एकरंगे माने ई जे फगुआक हंसी-खुषीक रंगमे रंगाएल रहैत अछि।

फगुआ एकटा एहेन सामाजिक लोक पर्व अछि जे सब गोटेकेँ एक रंगमे रंगि जेबाक सनेस दैत अछि। कहबाक ई जे लोक रंग 'फगुआ' सब लेल एक समान मोन हर्षित करैत अछि। एहि दिन सब गोटे फगुआक रंगमे रंगि जेबा लेल बेकल भेल रहैत अछि। कोनहु व्यक्ति रंग-अबीर उड़ेबा काल एक दोसराक जाति-धर्म नहि पूछैत अछि आ कि कोनो एहेन तरहक बेबहार करैत अछि।

मुदा कि हमरा लोकनि बेबहारिक जिनगीमे कि एहेन तरहक एकजुटताक प्रयास करैत छी। मोटामोटी देखब तँ इहे जे एकदम नहि? मिथिलामे रहनिहार सब गोटे अपने गाम-घर, गली-मुहल्लाक अपने अरोसिया-पड़ोसियासँ एतेक भेदभाव, जाति-पाति छूआछूतकेँ विचारसँ रंगायल रहैत छी किएक? एहेन भेदभाववला विचार मिथिलाकेँ बदरंग कऽ देलक अछि। मुदा तइओ सब अपने श्रेष्ठताक रंगमे रकमकल रहबा लेल बेहाल।

तँ आब अहिँ सब गोटे कहू जे फगुआ आबि गेल तइओ सब एक-दोसरासँ कन्नी कटने टंगघिची-घिच्चमतिरीकेँ रंगमे रंगाएल छी एना किएक? मिथिलामे रहनिहार सब मनुष्य मैथिल छथि, सब गोटे एहि बेबहारिक भावनाक एकरंगमे कहिया रंगायब?

मिथिलांचल टुडे दिससँ समस्त पाठककेँ रंगत पावनि फगुआक अंतरकणसँ बधाइ। एकटा निवेदन आओर - फगुआक रंगसँ अप्पन मोन रूपी वस्त्रकेँ एक रंगी नुआ नहि बनऊ जँ संभव होइ, संभव होएत किएक नहि, तँ एकरा बहुरंगी चुनरी बनाऊ।

किशन कारीगर

चिट्ठी पुरजी

संपादक जी..... आहां क कथित प्रयास मे लागल छथि, हास्य व्यंग्य, कविता, साहित्य समीक्षा, फिल्मी खबैर सब बड्ड नीक छल। आ मिथिलाक सुगंध चारू दिसि पसरि रहल अछि। मिथिलांचल टुडे धन्यवाद के पात्र छथि जे ओ सभ नीक मेहनत कए एकटा नीक मैथिली पत्रिका के प्रकाषन मे जी जान स समर्पित छथि। नव वर्ष 2014 आ हौली कें हार्दिक शुभकामनांए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, जे मिथिलांचल टुडे गाम घर, बजार सभ ठाम उपलब्ध रहाए आ पाठक ओकरा पढ़ैत। हमरा निक लागल.....

अनुराग ठाकुर (मिथिलांचल टुडे पाठक)

दरभंगा मे मिथिलांचल टुडे के कार्यालय देखि मोन बड्ड खुष भेल। ओतए पत्रिका के नव पुरान सबटा अंक सब भेटल। मैथिली पत्रिका के नव डेग बढ़ाउत ई पत्रिका नव वर्ष के अछि हमर ष्षुभकामना। मिथिलांचल टुडे मे रंग-बिरंगक आलेखक संग प्रतिष्ठित लेखक सभकें आलेख ज्ञानवर्धक लागल। सामाजिक,राजनीतिक आ ष्षैक्षिक संग साहित्यक भरपूर मिठास छल। मुदा कतौह कतौह कनेक अषुद्धी कनेक अनोन सन सेहो लागल। मुदा कुल मिला के मिथिलाचंल टुडे क संपूर्ण टीम नीक प्रयास क' रहल छथि आ एहि लेल ओ धन्यवाद के पात्र छथि। नव वर्ष 2014 मे ई पत्रिका घर घर मे लोकप्रीय होइ एतबाक आष अछि। पत्रिकाक साज सज्जा सेहो आकर्षक अछि आ डिजाइनर अरविंद जी के हम धन्यवाद दैत छियन्हि जे एतेक नीक पत्रिका के डिजाइन केने छथि। संपादकीय आ सबरंगी सेहो एकदम उत्साहवर्धक आ ज्ञानवर्धक छल। जगदानन्द जी के आलेख मसोमात पढ़ि सामाजिक चेतना जागृत भेल जे परिवार मे माए-बाबू के समुचित देखभाल करबाक चाही।

सीतानन्द राय
ग्राम-मंगरौना, भाया- अंधराठाढ़ी जिला- मधुबनी, मिथिला।

संपादक..... महोदय मिथिलांचल टुडे पत्रिका पढ़लहु नीक लागल। एकटा विष्वास जागल जे मैथिली आगू मुहे बढ़ि रहल अछि आ अप्पन मैथिली भाषा पहिने स बेसी समृद्धि दिस डेग आगू कए रहल अछि। मिथिला स बाहर रहि प्रवास मे एतेक दिक्कत रहितौह मातृभाषा लेल एहेन मजगूत मनोबल स' मिथिलांचल टुडे के टीम पूर्ण समर्पण स' मिथिला मैथिली के समृद्धि मे लागल छथि हुनका लोकनि के बधाई आ नव वर्ष 2014 के ष्षुभकामना। नव वर्ष मे मिथिलांचल टुडे लोकप्रियताक षिखर चढ़ै से हम कामना करैत छी। षि़क्षा, राजनीति, हास्य व्यग्य एक पर स एक नीक आलेख पढ़ि रोमांचित भेलहु। सभ आलेख ज्ञानवर्धक आ प्रेरणादायक लागल। कनि स्वास्थ्य, सौन्दर्य, आ युवा वर्गक हेतू रोजगार के अवसरवला कॉलम के अभाव बुझना गेल मुदा आषा करैत छी जे आगामी अंक सभ मे सभ विष्य वस्तु पर आलेख पढ़ि सकब।

प्रो0 डा0 गौरीषंकर राय
मनोविज्ञान विभाग
ल. ना. मिथिला विष्वविद्यालय
दरभंगा, मिथिला

चिट्ठी पुरजी

दरंभगा रेलवे स्टेषन आएल रही बड़का भैया के अरियातै लेल। हुनका गाड़ी पकरा के रेलवे टिषन के बाहर आपिस अबैत रही त अग्रवाल बुक स्टॉल पर मिथिलांचल टुडे देखलियैक। आकर्ष डिजाइन देखि मोन आकर्षित भेल। ओतए जा मिथिलांचल टुडे पत्रिका किनलहु आ पन्ना उनटा पढ़ए लगलहुँ। डेरा जाइत मातर पत्रिका के एकसूरे पढ़ि गेलहुँ। एक पर एक रोचक आलेख तहू पर हास्य व्यंगय पढ़ि हँसि स' रहल नहि गेल। हँसैत हँसैत पेट फूलए लागल। आगमी अंक के बाट एखने स' जोहि रहल छी। सभ विष्य वस्तु पर आलेख भेटल ई नीक बात। मैथिली पत्रिका के भीड़ मे मिथिलांचल टुडे अपन एकटा नव प्रयास स' सभ के मोन मोहि लेलक अछि। नव वर्ष 2014 के ष्षुभकामना जे ई पत्रिका प्रगतिक पथ पर आगू बढ़ै आ एकटा स्तरिय मैथिली पत्रिका पाठक लग उपलब्ध भ' सकैए।

प्रभाकर झा
ष्षुभंकरपूर दरभंगा, मिथिला।

लहेरियासराय गेल रही त पेपर किनबाक लेल मैगजीन सेंटर गेलहु ओतए मिथलांचल टुडे देखलियै। पहिने त विष्वासे नहि भेल जे एतए मैथिली पत्रिका भेटत। मुदा मिथिलांचल टुडे के आकर्ष डिजाइन देखि तुरंते ई पत्रिका किनलहुँ। एक पर एक रंग विरंगक आलेख सभ तहू पर एकदम चहटगर हास्य व्यंगय आ कथा कविता। फिल्मी फूलझड़ी त आर लाजवाब, पढ़ि मोन गद गद भेल। खेल खबैर पढ़ि क्रिकेट के रोमांच सन बुझना गेल आ भेल जे कतहु मैदान मे बैसि क्रिकेट मैच देखि रहल छी। दरभंगा मे मिथिलांचल टुडे के कार्यालय खूजला स' पाठक ओतए स सेहो पत्रिका किनी रहल छथि। नव वर्ष 2014 के मंगल कामना जे मिथिलांचल टुडे गाम गाम गली मोहल्ला सभ ठाम मिथिलाक सुधि पाठक तक पहुचए।

संजय कुमार 'गुड्डू'

संपादकय महोदय राजबिराज नेपाल धरि मिथिलांचल टुडे उपलब्ध भ' रहल अछि। ई बड्ड खुषीक गप जे नेपाल आ भारत दूनू भाग मिथिलांचल टुडे पत्रिका पाठक तक पहुँच रहल अछि आ मिथिलाक सुधि पाठक मे एकटा नव चेतना आनए। दरभंगा फिल्म फेस्टीवल मे हम राजविराज स' आएल रही। ओतए मिथिला विष्विद्यालय कैंपस मे मिथिलांचल टुडे पत्रिका सेहो भेटल। ओतए संपादक स' भेंट भेल आ कतेक रास साहित्यिक विचार विमर्ष भेल। एतए राजविराज मे एहि पत्रिका के लोकप्रियता दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि आ पाठक लोकनि आगामी अंक के बाट जोहि रहल छथि। संपादकीय टीम स हमर अनुरोध जे ससमय पत्रिका प्रकाषित होएत रहैए। नव वर्ष 2014 मे ई पत्रिका नव रूप मे सबके मोन मोहि लेत से हम आषा करैत छी। हम कएक टा आलेख पठेने रही जाहि मे से किछु आलेख छपबो केएल एहि लेल हम मिथिलांचल टुडे के संपूर्ण टीम के आभार आ हार्दिक बधाई जनबैत छी।

करूणा झा, राजविराज नेपाल।

कोरीयर के माध्यम स' मुंबई मे हमरा डेरा पर मिथलांचल टुडे पत्रिका पहुँचल। एतए कतेको लोक हमरा स' संपर्क कए पत्रिका प्राप्त केलैन्हि। किछु दिन कतेको लोक आगामी अंक के खोज पूछारी सेहो केलैन्ह। हमरा अपनो पत्रिका बड्ड नीक लागल। सदरे आलम जी फोन केलैन्ह जे पंकज भाई पत्रिका आबि गेल हम कहलियैन्ह जे हँ त ओ हमरा स' भेंट करबाक लेल दौगल अएलाह। हुनका स' भेंट घांट कए मोन गद गद भेल आ दुनू गोटे भरि मोन गप नाद केलहु आ मिथिलांचल टुडे सेहो पढ़लहु। आकर्षक डिजाइनक संग मिथिला राज्यक मांग पढ़ि अपना मिथिला राज लेल नव प्रेरणा भेटल। एक पर एक नीक आलेख छल मुदा कतहु कतहु अषुद्धि सेहो छल। संपादकीय टीम एहि बात पर धियान देताह से हम उम्मेद करैत छी। ओना मिथिलांचल टुडे के संपूर्ण टीम बधाई के पात्र छथि जे देषक राजधानी दिल्ली स' एकटा बेहतरीन मैथिली पत्रिका के प्रकाषित करबा मे जी जान स' लागल छथि।

पंकज झा मुंबई।

!! वन्दे मिथिला !! जय मैथिली !! जय मिथिला !! जय मैथिली !!
Rise For Mithila
People Against Unjust
LNMU Distance Education में
"मैथिली" विषय के सम्मिलित करेबाक लेल
अनिश्चितकालीन अनशन
शुक्रदिन 28 फरवरी, 2014
चौरंगी, दरभंगा
RISE FOR MITHILA
मिथिला ईकार्ड
9939650615, 8002758933, 8002303262
www.riseformithila.in
riseformithila@gmail.com
riseformithila
riseformithila
दिल्ली ईकार्ड
9654469539, 8802883766, 9540565757

§□ ª□□U □Ł—

औ जी महराज एहेन त ताले मात्रा नहि देखलहु। चुनावी बिगुल बजिते मातर जेकरा देखिऔ तकरे अपने सुरे बाजत- ई हमर छी। अहा खाली वोट दियअ आ ई हमर छी। बड़का-बड़का राष्टीय पार्टी स ल के राज्यक क्षेत्रीय पार्टीक नेताक हो हल्ला त देखिते बनत। जेहेन नेता तेहने घोष्णापत्र। चुनावी पिपही बजा जनता लेल रंग-बिरंगक ऑफर। कोनो नेता कहै छै जे हम घर देब, कियो ई जे जेतेक खाएब ततेक खाउ, घरे बैसल रहू आ एक्के पाई ने कमाउ।

हम एहेन बिकास करब त कहादिन ओहेन बिकास करब, अहा घर बैठल तमासा टा देखब। नेताजीक अजगुत ताल देखू- ई हमर छी।

दिल्ली मे एहि ई हमर छी दुआरे त बी.जे.पी, आप, कांग्रेस वला मे एहेन घमासान मचल छल जे एकटा नेता दोसर नेताक एक्को रति दसा बॉकि नहि रखलक। लोकसभा चुनाव ने एहने घमासान मचल अछि जे ई हमर छी। भ्रष्टाचारक पर्दाफाष मे नेता सब बिपक्षी पार्टीक नेता के बैकफुट पर धकैल रहल छैथ। आ से एहेन जे किछ कहै आ कि सुनै जोगरक नहि माने ई जे चुनावी हो हल्ला मे अधमरू भेल बात-बेबातक मुक्कम-मुक्की आ लोकसभा चुनावक घिचमतिरी मे सब पार्टी अपस्यॉत भेल अछि। हमरा त कोनो भाजे नहि बुझना जा रहल अछि जे केकरा वोट दियैअ आ कि नहि दियैअ।

हमर एहेन चिंतित भाव-विचार देखि सुखचन भाई बजलाह जे एहि मामिला मे हम कि कहू हमरो होइए जे अंगने अंगने जा के हमहू हल्ला करी जे ई हमर छी। आ कारीगर भाई अहा हमरा पाछू-पाछू हल्ला करैत रहब जे सुखचन भाई के भोट दियौअन आ अहाक सात पुस्त सुखचेन रहत। एक्को रति चिंता फिकिर नहि घर बैसले रहब कोनो काज धंधा नहि करब त अहॉ सब लेल बेकारी योजना फ्री। त आब हम खूम जोर स नारा लगा रहल छी जे ई हमर छी आ अहॉ हमरा संगे अहू हल्ला करू जे सब सूनू सूखचल भाई लोकसभा मे अहॉ सब लेल रंग बिरंगक बेकारी, चोरी-चपाटी बेइमानी-षैतानी वला भता जनता लेल फ्री क रहल छथि। सब गोटे मिली हिनका बेसी स बेसी वोट द जिताउ।

सुखचन भाई केर एहेन चुनावी ऑफर सुनि त हम खुषी स बेहोष भ' गेलहु जे आब कि करू पत्रकारक नौकरी करू आ कि हिनका पाछा-पाछा लोकसभा चुनावक हल्ला करू। हम एहि चिंता मे फसल छलहु कि ताबैत सुखचन भाई बजलाह जे यौ किषन भाई कथिक सोच मे पड़ि गेलहु। हम त कहैत छी अहा कोनो चिंता फिकीर नहि करू आ चुनावक टाइम मे पत्रकार वला नोकरी सेहो नहि करू। हम एलेक्सन मे ठाढ़ भेल छी त अहॉ नौकरी करब की हमरा संगे हो हल्ला करब। सुखचन भाई एकसूरे बाजि रहल छलाह जे आ हम चुपचाप सुनि रहल छलहु। हम त एहि प्रतिक्षा मे छलहु जे सूखचन भाइ केर चुनावी भाष्ण कखैन खत्म होउ आ हम जल्दी स ऑफिस आपिस चलि जाइ। हुनकर भाषण सुनि त हम सुखी हेबाक बदला एतेक दुखि भ गेलहु जे आब अकक्षाह सन लाग' लागल। भेल जे कैमरा मेन के कहियै जे आ सूखचन भाई के भाष्ण रेकर्ड केनाई बंद करू आ दौगल ऑफिस चलू। बेर बेर फोन आबि रहल छल। मुदा हमर सूखचन भाई एक्को रति मानै लेल तैयार नहि।

चुनावी सभा मे स बिदा भेले रही की सूखचन भाई सीकरेट सुनगबैत बजलाह जे औ जी महराज एतेक जल्दी किएक कैमरा बन्न क देलियै। थोड़ेक आओर फोटो घिच लितौह से नहि। अच्छा फोटो नहि घिचब त' हमरा संगे हल्ला करू जे- नेता जी के गप सुनू। एतबाक मे एक गोटे पूछलनि कि औ। कि सुखचन भाई सनकैत बजलाह आई रौ फलमा तहू बड़ि खाने बुझहैत छिही रौ। आबो ई गप बुझ जे- ई हम्मर छी। पुछनिया बाबू फेर सहास क एक बेर पुछलाह जे कथि अहाक छी। सूखचन भाई बजलाह धूर रे बुड़िबक पहिने हमरा वोट द' दे बाद मे सबटा तूं अपने मने बुझि जेबही जे- ई हमर छी।

लोकसभा चुनाव मे देखिऔ जे मोदी जी, केजरीवाल जी, राहुल जी मे राष्टीय स्तर पर एहि बातक घमासान मचल अछि जे -ई हमर छी। तीनू गोटाक संग राज्यक क्षेत्रीय दलक नेता सब सेहो चुनावी घमासान मे रमकल छैथ आ सबहक एक्के सूर देखू जे- ई हमर छी। एतेक तक जे गठबंधन केर राजनीति आ जोर-तोड़ के चुनावी खेल सेहो जमि के भ रहल अछि। त आब देरी कथिक नेता जी केर भाषण सुनू आ हुनका वोट दिऔन। नेता जीक बाकि बात साफे बुझहू जे- ई हमर छी।

✍ डॉ. किषन कारीगर

श्री बालाजी वृद्धा आश्रम मैलाम

वृद्धा अवस्था के कष्ट निवारण हेतू मूक्त

सेवा हेतु

निवेदक-ज्ञानसिंह

व्यवस्थापक-मनोज सिंह

-9709920155

ग्रा.+पो.- मैलमा

भाया.- राजनगर

जिला- मधुबनी (बिहार)

सबरंगी बात

मिथिलाक माटिसँ सिनेह राखू

नेना जखन रही तँ माए सदिखन कहथि ''बंटि चुटि खाइ राजा घर जाइ, असगर खाइ डोमा घर जाइ'' । ई गप्प तखन कहथि जखन घरमे कोनो खेबाक किंवा खेलबाक बस्तु कम होइत छल आ हम सभ भाइ बहिन बेसीसँ बेसी लेबाक लेल झगड़ा करए लगैत रही। माए केर आज्ञा मुदा वात्सल्यसँ भरल ई होइत छल जे जतबे वस्तु अछि ओकरा अपनामे सामंजस्यक संग बांटि लिअ। फेर की,जे कियोक भाइ बहिन बटैत छलहुँ से पूर्ण निष्ठाक संग। सबहक मुँहपर प्रसन्नताक भाव। कमो समानमे परिपूर्ण होबाक संतोष। हृदयसँ तिरपीत भेल मोन आ मस्तिष्क । ओहि समानपर सबहक अधिकार आ ओहि समानसँ सभकेँ साँझ कए कंसार लगबैत छली। आमक गाछक छाहरिमे एकटा फुसही घर आ घरमे एकटा चुल्हा। चुल्हा जरेबाक लेल पात, बाँसक करची आ आन आन तरहक अनेरुआ जारनि। दूटा फुटलाहा तौलाकेँ खपड़ि चुल्हामे चढ़ल। एकटामे बालु आ दोसरमे अन्न भुजबाक प्रयास। गामक घर सभसँ बच्चा एवं आन आन लोक सभ अनाज जेना चाउर, गहुम,बदाम केराउ आदि कंसार वाली लग लए कऽ अबैत छल। कनसार वाली ओहि अन्न सभकेँ दक्षताक संग भुजि दैत छलैक आ बदलामे एक दू मुठ्ठी अन्न अपन मेहनतानाक तौरपर राखि लैत छली। ओहि कंसारपर भुजा भुजेबाक अधिकार सबहक छलैक।

सिनेह। जखन ई बात स्मरण करैत छी तँ बुझना जाइत अछि जे इहे बात मैथिली भाषाक प्रति समस्त मिथिलामे आ मिथिलासँ बाहर रहनिहार सभ वर्ग,सम्प्रदाय, जाति, धर्म आदि केर मैथिली समुदायमे किएक नहि होइत छन्हि? कहीँ मैथिली भाषाक रस आ स्वरक बट्बारामे हमरा लोकनि छोट-पैघ, ऊँच-नीच, जाति-वर्ग क्षेत्र आदिक नामपर कुकरौझ तँ नहि करए लगैत छी? ई बड़का प्रश्न अछि जकर तहमे जेनाइ आवश्यक।

मैथिली भाषा आ साहित्यक तुलना कंसार वालीसँ कएल जा सकैत अछि। जखन नेना रही तँ बीचमे एक अधिबेसु महिला सभकेँ ओहि महिलापर विश्वास छलैक।

हमरा जनैत मैथिलीकें ओहिना सभ वर्ग, जाति आ क्षेत्र (मिथिलाक क्षेत्र)क पिआर आ सिनेह भेटबाक चाही मुदा एहेन स्थिति अछि नहि। हमरा लोकनि छोट-छोट गप्पपर लड़ैत छी। हालहिँमे जगदीश प्रसाद मंडलकेँ गुवाहाटीक समारोहमे मुख्य अतिथि नहि बनए देल गेलन्हि। नचिकेता जीकेँ पोथीपर हमरा लोकनि उचित धियान नहि देलहुँ। कियोक बजलाह जे विद्यापति हजाम छलाह तँ बहुतो रास लोक आमील पी लेलन्हि। नारा देमय लगलाह जे विद्यापति ब्राह्मण छलाह।

सबरंगी बात मुख्य गप्प ई अछि जे विद्यापति मिथिलाक गौरव छथि। एक घरीकेँ लेल मानि लिअ% जे विद्यापति हजाम छलाह तँ की ओ महान नहि छथि ? महानताकेँ जाति धर्मसँ की मतलब ? विद्यापति जे छथि वा जे छलाह से अपूर्व छलाह। जखन ई विवाद पढ़लहुँ आ पक्ष आ विपक्ष दुनूक वार्तालाप देखल तँ मोन घोर भ गेल। इहे थिक मैथिलीक दशा। हमरा लोकनि मैथिलीक नामपर जाति-पांतिक संकीर्णतामे डूबल छी। धिक्कार अछि!

एखन एक नीक परम्पराक विकास भए रहल अछि। तथाकथित छोट जातिमे मैथिली भाषा, साहित्यक प्रति रुझान बढ़ल अछि। नव-नव कवि , लेखक साहित्यकार, सृजनशीलतामे उत्साहित छथि। नव बिम्ब नब भावनाक जन्म भए रहल अछि। हलांकी किछु लोक जे पहिनेसँ बिना जनने मैथिलीपर धाक जमेने छथि से लोकनि एहि नव रचनाकार लोकनिकेँ अस्तित्वकेँ स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि छथि। होइत छन्हि जेना हुनकर बपौती सम्पतिपर दोसरो लोक आक्रमण कए रहल होन्हि।

ऐना किएक ? मैथिली लोक भाषा अछि। लोकभाषा ओ भेल जकरा लोक व्यवहारमे प्रयोग कएल जाइत होइ। लोकभाषा किसान,खेतिहर, बोनिहर,आ विद्यार्थि-विद्वान, महिला-पुरुष, आ कार्यालय सभकेँ जोड़य बला भाषा थिक। लोकभाषा ज्ञान आ शिक्षाकेँ सम्हारै बला भाषा थिक। लोकभाषा सृजनताक भाषा थिक। लोकभाषा सबहक भाषा थिक । एहि भाषामे अगर अनेरे अतिक्रमण करबैक, एकर आत्माकेँ खंडित कए संस्कृत एवं आन भाषाक कठिन शव्द घुसेरि एकरा जटिल बनेबैक तँ ई किछु फंतासि लोकक भाषा भ% जाएत। राजनीतिकरण करबैक तँ भाषा अपन साँस तोरए लागत। निष्प्राण होबए लागत।

हमरा लोकनि विद्यापति केर माला जपैत छी मुदा बिसरी जइत छी जे विद्यापति देसी भाषाक पक्षधर छला। हुनकर गीत आ लोक रचनाकेँ खेतक हरवाहासँ मंदिरक पुजारी धरि सभ पसीन करैत छल। मिथिलाक महिला लोकनि एक कंठसँ दोसरक कंठक मध्य पीढ़ी दर पीढ़ी विद्यापति पदावलीकेँ जीअने रहलीह। नहि कोनो पाण्डुलिपि आ नहिए कोनो पुस्तकालयकेँ जरुरत परलनि हुनका लोकनिकेँ । एतवे नहि कतेको महिला आओर पुरुष तँ विद्यापति केर पदावली परमपरामे अबै बला कतेको रचनाकेँ विद्यापति नामे जोड़ि देलनि।

बादमे मैथिलीकेँ आवसकतासँ बेसी संस्कृतीकरण होबअ लागल। लोक सब संस्कृतक शब्दावलीसँ मैथिलीकेँ अनेरे जनमानससँ दूर करबाक प्रकृतिमे लागि गेलाह । इमहर खाँटी शब्दावलीक प्रयोग करय वालाकेँ उपेक्षा होबअ लागल। खाँटी शब्दक उपयोग केनाइ अशिक्षा आ अज्ञानताक परिचापक होमय लागल। फेर की छल मैथिली छोटसँ छोट होइत गेलीह । अतवे नहि, नहीं मैथिली भाषाकेँ क्षेत्रीयताक आधारपर सेहो बांटी देल गेल।

उँच -नीच कए देल गेल। पछिमाहा-दछिनाहा, पुबहा कहि ओहि क्षेत्रक लोकक उपहास केलक। खांटी मैथिली विलुप्त भेल जा रहिल छली आ संस्कृत निष्टमैथिली किछु वर्ग आ समुह केर बंदनी भऽ गेल छली। भाषाकेँ वर्ग विशेषसँ जोड़ने विधवंसकारी भऽ सकैत अछि। एकर जीवंत उदहारण थिक उर्दू भाषा। उर्दूक अर्थ भेल बजार । एकर विकास सैनिक केन्तेनोमेंट एरियामे सैनिक सब जे विभिन्न प्रान्तसँ होएत छल ओ सब स्थानीय लोक सभसँ आपसमे वार्तालाप करबाक हेतु सम्प्रेषण केर भाषा अथवा बोली विकसित केलन्हि। बोलीमे कतेको तरहक भाषाक कतेको तरहक शव्दक प्रयोग भेलैक सहजताक संग धीरे धीरे उर्दू विकसित होमय लागल। उर्दू हिन्दवी परम्परामे आगा बढअ लागल। समस्त उत्तर भारत पंजाब आजुक पाकिस्तान पूर्वी भारत अर्थात बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेश धरि ई प्राणवान भ गेल। ई जनमानस केर भाषा भ गेल। प्रेमचंदसँ ल क आगाँ सब कियोक उर्दूमे लिखय लगलाह। पूरा पंजाब

हरयाणा आ कश्मीरक हिस्सा उर्दूमय भ गेल। एहि भाषामे रचनाक ढेर लागि गेल। बिभाजनक बाद भारत आ पाकिस्तान दू भाग भ गेल। जे मुसलमान भारतमे बचल रहि गेलाह कहि नहि किएक उर्दूकेँ मुसलमानक अस्तित्वसँ जोड़ि कए देखए लगलाह। राजनीतिसँ प्रेरित भए नेतासभ उर्दूकेँ मुसलमान वर्गक भाषासँ जोड़ि कए देखए लगलाह। रचना-धर्मितामे मंदी आबए लागल। हिन्दू लोकनि अपनाकेँ हिंदीसँ जोड़लनि। फिराक गोरखपुरी, गोपीचंद नारंग, गुलजार सब कियो उर्दूमे लिख एहि भाषाकेँ समृद्ध केलनि। मुदा उर्दुक गध्य साहित्यमे इजाफा नहि भेल। लोकक मोन टूटि गेलैक। पध्य तँ किछु प्राणवान रहबो केएल मुदा साहित्यक पतन सहजहि परिलक्षित होइत छैक। जँ मैथिलीकेँ सेहो अहिना रखलहुँ तँ मैथिलीक अस्तित्व डामाडोल भए जाएत।

मैथिलीमेँ सर्वहारा विचारधाराक विकास केनाइ, नव शव्दकोष आ नव शव्दावलीक विकास, लोक परम्पराकेँ जोड़नाइ सब वर्गक भाषा आ मनोदशा बुझनाइ आवश्यक अछि। आबू सब गोटे मिल कए मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास करी। तखने एकटा ठोस मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास संभव अछि।

।जयति मिथिला, जयति मैथिली ।।

✍ डा0 कैलाश कुमार मिश्र

हैल्थ मातृत्वस्थामे तनावक अनुभूतिक दुषपरिणाम।

ननी के दुनिया मे सभ स पैघ स्थान देल गेल अछि। किएक त ओ मानव श्रृष्टी केर विकास मे आधारभूत दायित्वक निर्वहन करैत छथिन्ह। माताक प्रसन्नता आ दु:खक प्रत्यक्ष प्रभाव संतानक मानसिक एंव ष्षारीरिक विकास पर पड़ैत छैक।

स्तान जखन गर्भावस्था मे रहैत छैक तखन ओकर संपूर्ण विकासक सूत्र माए स जुरल रहैत छैक। एहि अवस्था मे माता के जेहेन अनुभव होइत छन्हि गर्भ मे पोसा रहल संतान एहि स प्रभावित होइत छथि। एकर एकटा प्रत्यक्ष उदाहरण ई जे महाभारत काल के एकटा होनहार पात्र अभिमन्यू कथा त जनिते हेबै। ओ जखन अप्पन माता द्रोपदीक गर्भ मे रहथि तखन हुनक पिता अर्जुन हुनकर माय के चक्र व्यूह रचनाक संबध मे सुनौने रहथिन्ह। माताक माध्यम स चक्रव्यूह ज्ञान अभिमन्यू के जन्म स पूर्व गर्भेवस्था मे भेट गेल रहैन्हि। एकटा आओर प्रयोगात्मक अध्ययन मे पाई पर नाम, एकटा अमेरिकन मनोवैज्ञानिक जखन गर्भवति माता के हुनकर प्रिय संगीत सुनाउल गेलैन्ह त देखल गेल जे गर्भस्थ षिषु मे प्रसन्नतामूलक हलचल प्रारंभ भ' गेलैक। ई प्रयोगात्मक अध्ययन ओ एक हजार गर्भस्थ महिला पर कयलनि आ ई परिणाम भेटल जे गर्भस्थ माता ज प्रसन्न रहथि त हुनक संतानक मानसिक विकास पर एकर सकारात्मक प्रभाव पड़ैत छैक।

किंतु ज गर्भवास्था मे माता के निरंतर कष्ट आ कि बेसी तनाव कलेष्क अनुभव होइत छन्हि त एकर अति नकारात्मक प्रभाव गर्भस्थ षिषुक विकास पर त पड़िते छै जन्म लेबाक पछाति ओकर व्यक्तित्व, वेबहार आ चिंतनषैली अभियोजनात्मकता पर पड़ैत छैक। तें ई आवष्यक अछि जे परिवार मे एहन वातावरण बनेबाक चेष्टा करबाक चाही जाहि स गर्भस्थ महिला के बेसी प्रसन्नता भेटैक आ कम स कम तनावक अनुभूती होइन्ह।

ओना त तनावक वैज्ञानिक अध्ययन 20 वीं ष्षताब्दी मे हैन्स सैल्मे 1936 मे प्रारंभ केलन्हि आ ई साबित केलन्हि जे तनावक कारणें बहुत तरहक मानसिक आ ष्षारीरिक रोग उत्पन्न होइत छैक। परंच मिथिला मे प्राचिन काल स ई परंपरा आ लोकाचार चलि आबि रहल छैक जे जखने माता-पिता के ई खबरि भेटैत छन्हि जे हुनक विबाहित बेटी गर्भावस्था मे प्रवेष केलन्हि तखने ओ अप्पन पुत्री के सासुर स विदागरी करबाय नैहर ल अबैत छथिन्ह। एहि सामाजिक व्यवस्थाक पाछा एकटा पैघ कारण इएह छैक जे गर्भस्थ स्त्री तनाव स मुक्त रहि स्वस्थ षिषु के जन्म देथि। वर्तमान आधुनिक युग मे गाम-घर स बहुत दूर ष्षहर मे पतिक संग रहलाक कारणे ई सुविधा गर्भवती स्त्रीगण के नहि भेटैत छन्हि। तें तनाव निवारणक एकटा सहज साधन स ओ लाभान्वित नहि होइत छथि।

आब देखल जाए जे तनावक अनुभूति गर्भस्थ माता आ हुनक षिषु के रोना धति पहुचाबै छैक। जखन वातावरण केर मांग वा दवाब के सहन करबा मे व्यक्ति अपना के असमर्थ बुझह लगैत छथि त एहि अनुभूति के तनाव कहल जाइत छैक। जेना कोनो व्यक्ति कार्य क रहल छथि, हुनका पर आओर कार्यक बोझ देल जा रहल अछि आ निर्धारित समय सीमा मे हुनका सभटा कार्य करबाक छैन्ह। किंतु ओ देल गेल सबटा कार्य के करबा मे

हैल्थ असमर्थ बुझैत छथि परंच ओ कार्यस्थिति स भागि नहि सकैत छथि। एहन स्थिति मे जे बेचैनी वा झुंझलाहट उत्पन्न होइत छैक ओकरे मानसिक तनाव वा दवाब कहल जाइत अछि।

मातृत्वस्था मे मानसिक तनावक कतेको प्रकारक लक्षण उत्पन्न होइत छैक जेना की–

रात्रि मे बड्डु प्रयासक बाद नींद एनाई, कम नींद एनाई बीच बीच मे नींद टूटि गेनाई इत्यादी।

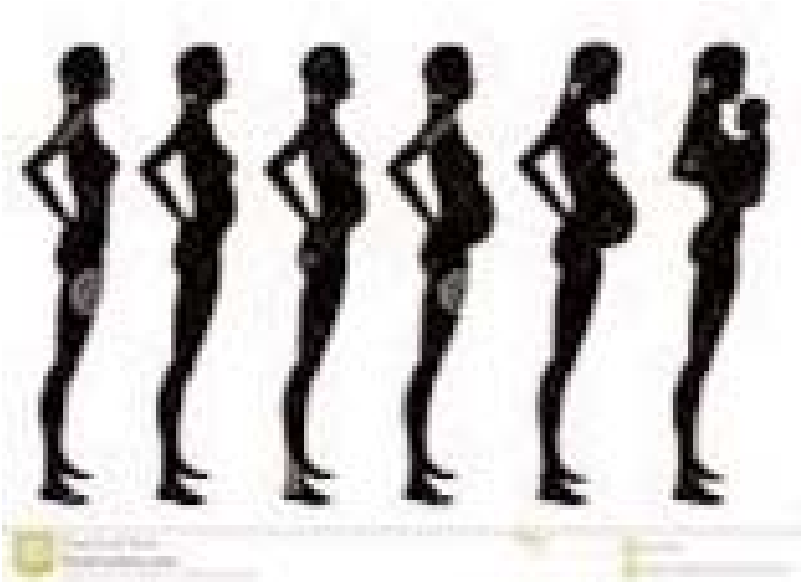

डेराउन सपना देखनाई आ एहेन सपना देखलाक कारणे नींद टूटि गेनाई आ डरक अनुभव भेनाइ।

बेर–बेर पेषाब लगनाई, ओना गर्भस्था के तेसर मासक बाद माता के बेसी बेर पेषाब लगैत छन्हि। जाहि स नीक जका नींद नहि अबैत छैक।

उदास रहनाई– तनावक अवस्था म ष्षरीर मे सेरोटोनिन नामक हारमोनक मात्रा बढ़ि जाइत छैक ते गर्भवती स्त्री सदिखन उदास रहैत छथि।

चिंतित रहनाई– तनावग्रस्त माता अनावष्यक आ संभावित डर स चिंतित रहैत छथि।

मधुमेहक लक्षण उत्पन्न भेनाई।

मानसिक तनावक जे कोनो कारण होय एकर स्पष्ट दुष्प्रभाव गर्भवति माता आ ओकर गर्भस्थ षिषु पर पड़ैत छैक। ते गर्भावस्था मे माता के तनाव मुक्त रहबाक आ रखबाक प्रयास करबाक चाही। गर्भवति माता जतेक पौष्टीक आहार खेतीह आ प्रसन्नचित रहतीह हुनक षिषु ओतबेक बेसी स्वस्थ हेतन्हि। पारिवारिक, सामाजिक आ नौकरी–चाकरी कारणे उत्पन्न मानसिक तनावक कारणें गर्भस्थ षिषु केर मानसिक विकास अवरूद्ध होइत छैक। जेकर सुधार केनाई बड्डु मोषकिल भ' जाइत अछि। ज गर्भावस्था केर प्रथम 3 मास मे माता अधिक तनावग्रस्त रहैत त हुनकर संतान के मंदबुद्धि हेबाक संभावना बढ़ि जाइत अछिं एकर अलावे तनावग्रस्त माताक संतान जखन किषोरावस्था मे रहैत छथि त ओहि बच्चा मे क्रोध, आक्रमकता आ कुसमायोजन केर प्रवृति बढ़ि जाइत छन्हि।

तें परिवारक सभ सदस्य लोकनिक ई प्रयास रखबाक चाही जे गर्भवति स्त्री के मानसिक तनाव नहि देल जाए। परिवार मे तनाव प्रबंधन केर चेष्टा करबाक चाही आ अनावष्यक निंदा डांट–फटकार कार्यबोझ के कम करबाक चाही। सामंजस्यपूर्ण आ सहानभूतिपूर्ण वातावरण रहबाक सामूहिक प्रयास करबाक सेहो चाही। तनाव दूर करै मे मनोरंजन केर महत्वपूर्ण भूमीका होइत छैक एहि दुआरे परिवार केर वातावरण मनोरंजक हेबाक चाही।

✍ प्रो0 डा. गौरी शंकर राय

भेटवार्ता

मिथिला राज्यक मांग पर मिथिला विकास मोर्चाकअध्यक्ष बी. के. यादव बिरबलसँ गप-शप

मिथिला राज्यक मांग जोर पकड़ने अछि एहेन मे मिथिला विकास मोर्चा के की पहल अछि।

अहॉ ठीके कहलहु जे मिथिला राज्यक माग आब एहेन मोड़ पर आबि गेल अछि जे मिथिलाक मैथिल के मेहनत रंग लाउत आ मिथिला राज्य अपन अधिकार ल के रहत। मिथिला बिकास मोर्चा एहि लेल केकरो स पाछू नहि रहत आ सभ गोटेक संग एहि अधिकारक लड़ाई के अलख जगौने रहत। हमर प्रतिनिधी कार्यकर्ता लोकनि आपसिक एकजूटताक संग अप्पन मिथिला राज्यक मांग लेल प्रतिबद्ध रहत।

मिथिला राज्यक मांग त' भ रहल अछि मुदा एतेक अवरोध सभ जे अछि एकरा स कोना निपटब?

देखिओ अवरोध कोनो एहेन नहि अछि। मुदा हॅ एकटा अवरोध एहनो अछि जे राज्य आंदोलन केर मांग के कमजोर बनबैत अछि। मिथिला लेल सब स बड़का अवरोध जातिगत भावना स ग्रसित लोक आ एहने जातिगत भावना जे जाति-पाति के नाम पर मिथिला के बॅटबाक प्रयास मे लागल रहैत छथि। एतेक तक जे अपना के मिथिलाक प्रतिनिधी आ अनकर योगदान के एक्को पाई मोजर नहि दैत छैक जाहि स लोकक भावना के ठेस पहुचैत अछि।

मिथिला राज्यक मांग लेल कतेको संस्था बनल अछि मुदा सबहक सूर एक दोसरा स अलग अछि एना किएक?

अलग भेनाइ स्वाभाविके। जतेक संस्था छैक बेसीतर मे एक्के जाति के लोक ओकर कर्ता-धर्ता आ मिथिला ओकरे टा छिएक से भावना छैक मुदा सामूहिक भावना वला विचार नामे टा लेल छैक। एहने घटिया विचार वला संस्था सबहक कारणे मिथिला राज्यक आंदोलन पर विपरीत प्रभाव पड़ैत छैक। लोक नामे टा लेल ई कहैत छक जे सबहक मिथिला छी मुदा तरे-तरे एहेन भीतरघात आ जाति-पात वला भेदभाव छै जे केकरो स किछु छुपल नहि अछि।

मिथिला विकास मोर्चाक विचार केहेन अछि आ कोना मुद्दा पर काज क' रहल अछि।

देखिऔ मिथिला विकास मोर्चा केर एक्के टा मुद्दा छैक सामूहिक मिथिला। माने ई जे बड़का-छोटका के एक्को पाई भेद नहि। मिथिलाक प्रत्येक व्यक्ति मैथिल छथि चाहे हुनकर जाति-धर्म कोनो होउ। जातिगत श्रेष्ठताक विरोध हम सभ हरदम करैत रहलहु आ करब। अहा कतेको संस्था देखू जाति मे एक्के जातिक लोक कार्यकारणी सं ल के कार्यकर्ता धरि अछि आ नामे टा लेल दोसर जातिक एक आध टा लोक के बिधि पूरबै लेल राखल गेल अछि। संस्थागत निर्णय मे एक्को रति मोजर नहि त फेर कत स सब लेल सोचल जाइत अछि।

हालफिलहाल मे मि रा नि सेना के दिल्ली मे सम्मेलन भेल छल अहॉक की विचार अछि

मि रा नि सेना के सम्मेलन त भेल मुदा कि भेल सभ जनिते अछि। हुनका लोकनि केर जातिगत श्रेष्ठता छोड़ि आर कोनो मुद्दा छन्हि ओ सभ महाराष्ट नव निर्माण सेनाक तर्ज पर काज क रहल छथि आ फुसियाहिक लेल संपूर्ण मिथिलाक बात लोक सभ स धोखा क रहल छथि। हुनकर कार्यकारणी मे 20 बाइस टा एक्के जातिक लोक छथि एहि सं संस्था क उद्देष्य बिना किछ कहने सुस्पष्ट भ' जाइत अछि।

त' की मि बि मोर्चा मे सभ जातिक लोक के जगह देल गेल अछि आ एक्कर कार्यषैली दोसर संस्था स' केहेन अछि। मि बि मोर्चा के अवधारणा आ कार्यषैली एकदम स्पष्ट अछि। माने ई जे मिथिला सबहक अछि आ जातिगत आधार पर कोनो भेदभाव नहि। सब वर्गक लोक कार्यकारणी स कार्यकर्ता धरि छथि आ संस्थागत निर्णय मे सब गोटेक विचार महत्वपूर्ण मानल जाइत छै। हम मिथिलाक सब संस्था स आग्रह करब जे ओ सामूहिक मिथिला लेल कार्य करैथ तखने मिथिला राज्यक सपना पूर होयत। कोनो तरहक सुझाव आ प्रतिक्रिया लेल हमरा स संपर्क सेहो क सकैत छी-

बिनोद कुमार यादव बीरबल
राष्टीय अध्यक्ष
मिथिला विकास मोर्चा
दिल्ली प्रदेष

कला : सबल समाजक अंर्तद्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार

साम्यवाद मात्र कोनो राजनैतिक चेतना नै अतिक्रमणवादी बेवस्थाक विरूद्ध एकटा समाजवादी विचारधारा थिक। मैथिली साहित्यक संग ई बड़ पैघ विडम्वना रहल जे वचनसँ तँ बहुत रास रचनाकार अपनाकेँ साम्यवादी मानैत छथि मुदा जखन कर्मक बेर अबैत छनहि तँ कतौ कोनो सार्थकता नै। इतिहास साक्षी अछि कोनो भाषा साहित्यक विकास ओकर विचारधाराक सम्यक सम्पोषणपर निर्भर रहल अछि। यूनानी साहित्यकार होमरक इलियड आ ओडेसी, कार्ल्स मार्क्सक दास कैपिटलसँ लऽ कऽ मैक्सिम गोर्की मदर आ माओत्से तुंगक आनकन्ट्राडिक्सन सन सारगर्भित विदेशी पोथी समन्वयवादक स्थापनाक लेल क्रांतिक द्योतक थिक। लियो टाल्सटाय आ लेनिन ऐ दर्शनमे सूरमाक काज केलनि। आर्यावर्त्तक इतिहास सेहो ऐसँ अक्षोप नै। रामचरित मानसमे रामराज्यक परिकल्पना आ सवरीक सिनेह समन्वयवादक द्योतक थिक। मात्र चौपाइक कारणे ई ग्रन्थ जनप्रिय नै भेल। श्री मद्भागवत गीतामे कृष्णक उपदेश निश्चित रूपसँ शांतिक लेल युद्धक प्रतीक मुदा ऐ क्रांतिमे सेहो समाजमे समन्वयवादक आश लगाओल गेल। ''देसिल वयना सभ जन मिट्ठा''क कतेको गुणगान कएल जाए मुदा हमर साहित्यक इतिहास श्रृंगार आ यशोगानसँ आगू नै बढ़ि रहल छल। ऐ उपक्रममे ललित आ धूमकेतु सन आधुनिक रचनाकार अवश्य समन्वयवादक आश लऽ कऽ एलाह। ऐसँ पूर्वक साहित्य अपन समाजमे केतबो गुणगानक ध्वजकेँ जाज्वल्यमान करए मुदा आन क्षेत्रक लेल मात्र मधुर भाषा बनि कऽ रहि गेल जाइमे पग-पग पोखरि माछ मखानसँ बेसी आश राखब अनर्गल छल। कर्मवादिताक आधारपर जौं निर्णए कएल जाए तँ साहित्यसँ साम्यवादक घृतगंध मात्र किछुए साहित्यकारक लेखनीसँ झहरैत भेटत, जइमे प्रमुख छथि जगदीश प्रसाद मण्डल, बैद्यनाथ मिश्र यात्री, चतुरानन मिश्र, ललित, धूमकेतु, गजेन्द्र ठाकुर, सुधांशु शेखर चौधरी, कुमार पवन आ श्रीमती कमला चौधरी। वास्तवमे मैथिली उपन्यास विधामे साम्यवादक संस्थापक वैद्यनाथ मिश्र यात्री (कृति- पारो) आ चतुरानन मिश्र (कृति- कला) केँ मानल जा सकैछ। ई मात्र संयोग मानल जाए जे दुनू साहित्यकारक कृति एकहि वर्ष सन 1947 ई.मे प्रकाशित भेल। ओही कालमे यात्री परिपक्व रचनाकार भऽ गेल छलाह, मुदा चतुरानन एकटा काँच क्रांतिवादी युवक रहथि। एकटा मजदूर आन्दोलनक नेतृत्व केनिहार 21 वर्षक नवयुवकक लेखनीसँ निकसल ऐ उपन्यास नै समाजक लेल लिखल क्रांतिगीतकेँ पूर्ण वैचारिक मान्यता किएक नै भेटल ई विचारनीय प्रश्न थिक। कलाक अतिरिक्त चतुरानन मिश्रीजी विकास, संझा माए, जागरण आदि लघु उपन्यास लिखने छथि मुदा सामान्य पाठकक लेल साहित्यकार नै मानल जाइत छथि। कलाक पहिलुक प्रकाशन 1948 ई.मे भेल। मैथिली अकादमी सन् 1948 ई.मे ऐ पोथीकेँ फेरसँ प्रकाशन केलक। हिरमोहन झा आ यात्री सन चर्चित लोकनि एकर सारगर्भितासँ हर्षित भेलाह, मुदा पाग प्रधान मिथिलामे ''कला'' केँ कहए जे वाहवाहीक मुरेठा सेहो नै भेटल। समालोचक लोकनि केतौ-केतौ मर्यादावश उल्लेख तँ करैत छथि मुदा ''क्रांतिवीर'' कहबामे संकोच होइत छनहि किएक तँ ई साम्यवादी राजनीतिज्ञ कालसँ पूर्वहिं लिखब छोड़ि देलक।

आब प्रश्न उठैत अछि जे चतुराननकेँ साहित्यक महिमा मंडनक पिरही नै देल जाए किएक तँ परिपक्व भेलाह वाद लिखनाइ छोड़ि देलक आ संग-संग दोहरी चरित्र जे जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ सेहो महत्व नै देल जाए किएक तँ ओ परिपक्व भेलाक बाद लिखलक आ लिख रहल अछि की ई उचित...

एकटा समन्वयवादपर आघात मानल जाए। ई दुनू केकरो यशोगान आ केकरो तगेदासँ नै लिखलक। एकर एकर गंभीर परिणाम जे जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ''टैगोर साहित्य सम्मान'' सन सम्मान भेटल मुदा मिथिलाक कोनो समाचार पत्रसँ ई प्रकाशित नै भेल। मैथिली भाषा मात्रमे ऐ प्रकारक अर्न्तद्वन्द्व संभव छैक। समन्वयवादसँ हमरा सबहक ऑत किएक डोलि जाइत अछि एकर अर्थ स्पष्ट जे भाषाक प्रचारक आ संरक्षक लोकनिमे पारदर्शिताक संग-संग प्रतिभा सेहो नै छनहि आ आत्मग्लानि (comple&ion) सँ ग्रसित छथि।

मात्र 54 पृष्ठक एकटा छोट-छीन जेकरा अतिवादी समालोचकक दृष्टिमे झुझुआन सेहो कहल जा सकैछ, औपन्यासिक कृति ''कला'' मिथिलाक निरापद समाजक नारी दोहनक वृत्ति चित्र थिक। मैथिलीमे रचनाक संख्या बल आगालक ताल रचनाकारक स्तरक मूलाधार होइछ। ''कला'' पढ़लाक बाद ई अक्षरशः प्रमाणित भऽ गेल। जइ समाजमे अखनो विधवा बिआह अमान्य मानल जाइछ। ओइ समाजक एकटा नारीमे चेतना आ सकारात्मक परिणामक संग उद्देश्य प्रापतिक आश लगभग 66 वर्ष पूर्व राखब एकटा क्रांतिवादी विचारधाराक कारण मानल जा सकैछ। महेश बाबू गरीब मुदा ऊँच-नीच बुझनिहार व्यक्ति छथि। ओ अपन 10 वर्षक ज्येष्ठ कन्या ''कला'' क बिआह नै करए चाहैत छथि, मुदा पारिवारिक स्थिति आ समाजक दशो-दिशा महेश बाबूक मुख बन्न कऽ देलकनि 50 बीघा जमीनक मालिक बूढ़ वर मनेजर भाइसँ कलाक बिआह करए पड़लनि।

अपराधवोध नीक लोककेँ अवश्य होइछ। परिस्थितिवश आर्थिक दृष्टिसँ निःशक्त महेन्द्र बाबू बेटीक बिआहसँ पूर्वहि अपन कनियाँक नाओंसँ समाजक आ परिस्थितिक देल पीड़ाकेँ पतिया स्वरूप लिख निपत्ता भऽ गेलाह। एकटा बूढ़ वरक कनियाँ जे क्षणहिं पर्व कॉच कन्या छलीह आब वयससँ नै मुदा जीवन शैलीमे परिवर्तनसँ व्यस्थित आ बेसाहु भऽ गेलीह। एक वर्षक दाम्पत्य जीवन व्यतीत केलाक बाद अज्ञात यौवना बालिका चित्राक ''बूढ़ वर'' कविताक नायिका जकाँ विवा भऽ गेलीह। मुदा ''जो रे

राक्षस, जो रे पुरुष जाति। तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहल छी...।'' केर उद्घोष नै केलीह। माए-बाप आ समाजक देल अवांक्षित वैधव्यकेँ मूक स्वीकारोक्ति कलाक परिपक्वताक नै परिस्थितिकि नष्कर्ष भऽ गेल। ''कला'' वैधव्यक कष्टसँ कानलि तँ रहथि मुदा छोट वयसक कारणे जीवनमे एतेक भारी विपत्तिक आगमन केर पूर्ण भान नै भेल छलनि। ''अज्ञात नव यौवना'' (कोनो राजकमलक कथानायिका नै मिथिलाक गुणगान करए बड़ा छद्म ब्राह्मण जातिक कन्या) विधवा संकटा बनि गेली। क्षणिक चुहचुहीसँ भरल कलाकेँ देख सासु कहलखिन- ''वौआसिन केर विधवाक शोभा नै संकटे थिक तँए हमर विचार जे कहबा लितहुँ''

फेर गंगा कातमे कलाक मूड़न भेल। ई मिथिलाक तादात्म्य, मैथिल ब्राह्मणक शक्तिकेँ की मानल जाए इहए कारण थिक जे सम्पूर्ण भारतमे धर्म सुधार आन्दोलन भेल, मुदा मिथिलामे नै। ओना ऐ तरहक प्रवृत्ति आन ठामक ब्राह्मणमे सेहो छनहि, मुदा एतेक कट्टरता नै। अवलाक शोणितसँ जातिवादी हथियारकेँ पिजा कऽ कहिया धरि अपनाकेँ ''सवर्ण'' कहैत रहत, ई तँ अवर्णोक लेल ग्राह्य नै। जौं एतबे टामे ''कला''क ललित कलाक इतिश्री भऽ गेल रहितए तँ विशेष गप्प नै छल। अवलाि नर्वला कलाकेँ हुनक दिअर सुन्दर बाबू जे वयसमे कलाक पिताक समान छथि चरित्र हनन कऽ कुलक्षणा पतिता आ कलंकिता माताक रूप दऽ देलखिन। कला गर्भवती भऽ गेलीह। भरि दिनक गारि आ शापसँ कला असहज भऽ सासुकेँ जबाव देलखिन- ''अपन कोखि केहन भेलनि जे एहन सुपुत्र जे जनमओलनि। शौख केहन भेलनि जे पचास वर्षक बूढ़ बेटा ले नओ वर्षक कनियाँ तकैत छलीह...।''

सुन्दर बाबू जे पहिने कलाक चरित्रहंता खलनायक छलाह आब मर्यादा पुरुषेत्तम बनि माइक आदेशपर कलाकेँ मूर्छित कऽ देलनि। जखन वियति अबैछ तँ सगरो दिश अन्हार जेम्हरे जीव जेबाक प्रयत्न करैछ तेम्हरे संकट। कला भाग कऽ बनारस चलि गेलीह। एकटा तथाकथित मैथिल भद्रमहिला सोमदाइ कलाकेँ षडयंत्रसँ गयिका बना कऽ बेचए चाहैत छलीह। एकटा ब्राह्मणी सहायतासँ कला चरित्र दोहणसँ बचि तँ गेलीह मुदा पीड़ा अग्राहण भऽ गेलनि। परिणाम भेल आत्महत्याक प्रयास, मुदा अभागलिकेँ मरनाइ सेहो कठिन होइछ। सात दिन अस्पतालमे रहलाक बाद जखन किछु सुधार भेलनि तँ डॉ. कलानंदसँ साक्षात्कार जीवनमे सुखद अनुभूति लऽ कऽ आएल। युवक डॉ. कलानंद आत्महत्याकेँ उचित नै मानैत छथि। ओ सुधारवादी ब्राह्मण छथि। विधवाकेँ बिआह कऽ लेबाक चाही....। डॉ. कलानुदक तर्क कलाकेँ असहज लगलनि। ऐ समाजमे विधवाक नारकीय स्थितिसँ उद्वेलित कला ''सती प्रथा'' केँ उचित मानैत छथि। केहेन विकट परिस्थिति थिक जइठामक नारी अवला जीवनक अभिशापसँ बेसी चरित्र हननक डरसँ सती हएब उचित बुझैत छथि। तथाकथित पुरुषप्रधान सबल वर्गक नारी दिन भरि खटैत रहए सभ दैनन्दिनीमे परिवारक सहयोगी मुदा यात्राकालमे अशुभ। आश्चर्य अछि समाजक अग्र आसनपर बैसल धर्मा नर्माता आ बेवस्थाक कथाकथित मनुवादी प्रवृति ओ दर्शन। जौं मनुवादकेँ हृदैसँ मानैत छथि तैयो एहेन दृष्टिकोण हएब उचित नै। मनु तँ एकर समर्थन कथमपि नै कएने हेता। जौं हुनको इहए दृष्टिकोण छलनि तँ एहेन व्यक्तिक लिखल स्मृति समाजपर कलंक मानल जाए। ऐ क्रममे सभसँ नीक लागल चतुरानन जीक समन्वयवादी विचारधाराक बेबाक विश्लेषण। डॉ. कलानन्द अन्तरजातीय आ अन्तरप्रान्तीयि बिआहक समर्थक छथि कलानंदक ऐ दृष्टिकोणकेँ साम्यवादी विचारधाराक अनुशीलन हेतु चतुरानन जीक आत्म उद्बोधन मानल जाए।

उपन्यासकि नष्कर्ष सकारात्मक अछि। डॉ. ''कलानंद'' कलानंदसँ ''कलाकान्त'' अर्थात् कला दाइक पति भऽ गेलाह। दंतहीन मैनेजर भाइ जकाँ नै सुन्दबाबूसँ संस्कृत शिक्षा ग्रहण करैवाली ''कला''क सुयोग्य पति- डॉ. कलानंद। कलाक जिज्ञासा छलनि जे विधवा ट्रेनिंग कैम्प चलैत रहए। ओ पूर्ण भेलनि। डॉ. कलानंद आब औषधालय खोलि राजनीतिमे कूदए चाहैत छथि। औषधालयसँ जे आमदनी हेतनि ओइसँ परिवारक भरण-पोषण डॉ. साहेबक मूल उद्देश्य छनहि। रचनाकार राजनीतिज्ञक लेल प्रश्न ठाढ़ कऽ देलनि जे राजनीतिमे रहैबला लोक समाज सेवाकेँ अपन उद्देश्य बनाबथु। राज्यक धनसँ परिवारक पोषण नै ई तँ ''ऑनरेरी सर्विस'' हेबाक चाही। कला सोलह बर्खक बाद अपन नैहर एलीह मुदा सभ किछु नष्ट भऽ गेल छलनि। ऐ उपन्यासमे महाजनवादी सूदिखोरी प्रथाक विरोध सेहो कएल गेल अछि।

निष्कर्षत- ई उपन्यास विन्याक दृष्टिसँ किछु विशेष नै किएक तँ मैथिलीमे कथोपकथनसँ बेसी विन्यासक महत होइत छैक। चोटगर आ रसगर गप्प ऐमे नै छैक तँए ई समालोचक लोकनिकेँ नै पचलनि। जौं चतुरानन जीक ऐ तरहक दृष्टिकोण जे अखन धरि मात्र कल्पना थिक, समाज द्वारा अर्न्तमनसँ स्वीकार कऽ लेल जाए तँ चतुरानन जीक लेखनीक सार्थकता परिलक्षित होएत।

ऐ मौलिक कृतिक प्रासंगिकता समाजमे अखनो अछि। जे वर्ग स्वयंकेँ मस्तिष्क कहैत छथि ओइमे अखन धरि सम्यक साम्यवादी तत्वक विकासमे लागल धून अखन धरि व्याप्त अछि। ओना स्थिति बदलि रहलै आ बाल-बिआह लगभग मिथिलामे न्यून भऽ गेलैक मुदा काटर प्रथा आ वैधव्य जीवनक दारूणिक बेथाकेँ अखनो सबल समाजमे मान्यता छैक। ब्राह्मण शिक्षा स्पोतक मूलांकुर रहल छथि तँए राजतंत्रीय बेवस्थामे पएर पुजेबाक हिनका अधिकार छलनि मुदा कि ऐ वर्गक विद्धत लोकनि ओइ अधिकारक प्रयोग समाजमे समन्वयवादी बेवस्थाक स्थापनाक लेल कऽ सकलनि

द्रविड़ समाजमे तँ बहुत हद धरि जाति-पातिक दृष्टिकोणमे कमी आएल मुदा आर्य समूह विशेष कऽ कऽ मिथिलामे अखन धरि आनक प्रतिमाकेँ प्रोत्साहित करब वा सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकासमे भूमिका देबएमे सबल वर्गकेँ अखनो कचोट होइत छनहि। जाधरि ऐ मानसिकतासँ मुक्ति नै भेटत चतुराननजी सन समन्वयवादी विचारधारा पुरान रहितो नूतन मानल जाएत। विश्वास अछि जे स्वयंकेँ मूल्यांकन कएल जाए जे हम सभ कतए जा रहल छी इहए ''कला''क कलात्मता ओ तादात्म्यक सार्थक श्रद्धांजलि हएत।

शिवकुमार झा 'टिल्लू'

निवंध प्रतियोगिता

मिथिलांचल टूडे द्वारा कक्षा 9 सँ लऽ कए बी.ए/बी.एस.सी/ बी.कॉम/इंजीनियरिंग /चिकित्सा विज्ञानक छात्र/छात्रा हेतु एकटा निबंध प्रतियोगिता राखल गेल अछि .

निबंधक विषय- **''स्वरोजगार केर अवसर,आवश्यकता आओर चुनौती''**

प्रतिभागी हेतु नियम:-

1. कक्षा 9 सँ - स्नातक तककेँ छात्र भाग लए सकैत छथि
2. उम्र सीमा - 12 वर्ष -25 वर्ष
3.रचना मौलिक एवं स्व लिखित हेबाक चाही
4.आलेख मैथिलि भाषामे हेबाक चाही
5.रचना पठेबाक अंतिम तिथि -25 अप्रैल2014
6. प्रतिभागी लोकनि अपन आलेख, E-mail:- mithilanchaltoday12@gmail.com आ डाकसँ मिथिलांचल टुडे, बी 2/333,तारा नगर, ओल्ड पालम रोड, ककरोला, सेक्टर-15 द्वारका, दिल्ली 110078.
7. आलेखक संग अपन परिचय एवं पत्राचारक पूरा पता अबश्य पठाबी
8. विशेष जानकारी हेतु संपर्क करी मो0 न0+919990065181 /+919212461006/+919868963743.

निर्णयाक मण्डलीमे छथि - 1.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र 2.डॉ. किशन कारीगर 3. जगदानन्द झा 'मनु'

पुरस्कार:- निबंध प्रतियोगितामे चयनित प्रतिभागीकेँ समुचित पुरस्कार राशी एवं प्रमाणपत्र देल जाएत ।

सादर

डॉ. किशन कारीगर

संपादक

मिथिलांचल टुडे

कविकोकिल विद्यापति ठाकुर

कविकोकिल विद्यापति ठाकुर, मैथिल ब्राह्मण, मूल विसैवार, सौराठ ग्रामकेँ निवासी छलाह ।पश्चात् विसफी ग्राममे आवि वसलाह । हुनक धम ? पत्नी सुधीरा, दुल्लहि पुत्री, हरिपति पुत्र छलथिन्ह । एकटा मूँह लगुआ नोकर रामा छलन्हि । एकटा बरद, किछु खेत छलैन्ह जाहिसँ कष्टेमे गुजर करैत छलाह ।

विद्यापति कविता कलापकेँ विशेष रसज्ञ तथा मिथिला महाराज शिव सिंह उफ ? शिवै सिंहकेँ प्रधान राज कवि छलाह । अनेक ग्रन्थक रचयिता यथा कीति ?लता, पुरूष परिक्षा, लिखनावली, शैवसव ?स्व, विभगासार, गयापतन, दुगा ?भक्तितरंगणी, दानवाक्यमाला, गंगावाक्यावली छलाह । हुनक रचल घनेर तिरहुत गीत छन्हि । एहन मिथिलावासी के हेता जिनका विद्यापतिक एक आध रचना याद नहि हेतनि । यथा '' माधव कि कहब सुन्दरि रूपे, कतेक जतन विधि आनि समारल देखइत नयन स्वरूपे ।'' '' महेशवाणी ....हम नहि आजु रहब अहि आँगन जौँ बुढ होएत जमाय '' ।।

विद्यापति जीक पितामही श्रीमति लक्ष्मी ठकुराइन विदुषी छलथिन्ह जे राजा हरिसिंह देवके सभा जाय श्रीमान् हरिनाथ मिश्रजीक पत्नीकेँ लाँक्षित होमयसँ बचोने छलथिन्ह ।

महाराज हरिसिंहदेव गायक छलाह, हुनकर सभामे बहुत नीक..नीक गायक छलैन जाहिमे कलानिधि नामक गायक सेहो छळाह अथा ?त हुनका लोकनिक वण ?ण विद्यापति जी अपन रचना पुरूषपरिक्षा ग़न्थमे गीताविद कथा शिष ?क कथामे विस्तृत वण ?न कएने छथि । अस्तु देवसिंहक वाद हुनकहि पूत्र शिवसिंह राजा भेलाह जिनकर राजधानी देकुली लग वगमतीक तट पर गजरथपुर नगरी छलन्हि । मुसलमानक आक़मणसँ गजरथपुर विनष्ट भय गेल महाराज शिवसिंह दिल्ली कारागारहिंमे मृत्युकेँ पा़प्त कएलन्हि, हुनक धम? पत्नी लखिमा ठकुराइनकेँ विद्यापति ठाकुर शिवसिंहक मित्र जे सप्तरीमे रहैत छलाह ओतहि लय गेलथिन्ह, बारह वष? धरि शिव सिंहक प़तिक्षामे रहलाह विद्यापतिक लेल इ सभसँ कष्टमय समय छलन्हिं । ओहि अवधिमे विद्यापति जी ''लिखनावली'' नामक पुस्तकक रचना कएलन्हि जाहिमे पुरादित्यक उल्लेख अछि । बारह वष ?क ''सन् 1445 सँ 1457 धरि'' वाद लखिमा देवी सती भय गेलीह तथा शिवसिंहक भाई पद्मसिंह मिथिलाक राजा भेलाह, हुनक स्वगा ?रोहणक पश्चात्य पद्मसिंहक पत्नी विश्वास देवी राजा भेलीह, विद्यापति जीक रचना शैवसव ?श्वसार नामक ग़न्थमे विश्वास देवीक बहुत प़शंसा कएने छथि ।

शिवसिंह एवं पद्मसिंह दूनू नि:सन्तानी छलाह तैं देवसिंहक भाइ हरिसिंह जे हरड़ी ग़ाम, अन्धराठाढी प़खण्डक अन्तग ?त अछि रहैत छलाह हुनकहि पुत्र हृदयनारायण उपनाम नरसिंह मिथिलाक राजा भेलाह, जिनको राजकवि विद्यापति छलाह । मिथिला महाराज नरसिंहक आदेसपर विद्यापतिजी ''विभागसार'' नामक पुस्तक बनोलनि ।

महाकवि जन्मना ज्ञाणी, राजा शिवसिंह मुख्यसचिव, राजकवि, गृहस्त छलाह । महाकविक कविताकलापक माधुय? पर मुग्धभय अनन्तकोटिब़ह्माण्डनायक भगवान आशुतोष ''शंकर'' स्वयं ''उगना'' रूपमे महाकविक सेवक बनि गेल रहथि . महाकविय शेव्य आ ब़ह्माण्डनायक शंकर ''उगना'' रूपमे सेवक । वाँकी कथा सव? विदित अछी.....

महाकवि अन्त समयमे महाप़याणक लेल जखन खरखरियापर गंगा निकट जा रहल छलाह तँ वाटहिंमे बुझि परलैन्ह जे हमर समय निकट आवि गेल कि महाकवि झट दय बाजि उठलाह औ कहरिया सभ आब गंगा कतेक दुर छथि ? ई सुनि कहरिया कहलकन्हि गुरूजी भरिसक अहिठामसँ दू कोस हेतीह । ई सुनितहिं महाकवि कहलथिन्ह अरे हम जखन अतेक दूर आवि गेलहुं तँ कि हमर इष्टदेव बह्माण्डनायक उगनाक गंगाजी एतेक दूर नहि एतीह । ई कहि खरखरियासँ उतरि महाकवि अपन गंगाधर उगनाक नचारी गावय लगलाह । गेर कि छल डमरूक शव्द जकाँ शव्दायमान करैत भगवती भागिरथी धरतीकें चिरैत महाकविक निकट पहुँचि गेलीह, आ महाकवि ओहिसुरनदी ''गंगाजी''मे सदेह समा गेलाह ।

ओ स्थान समप़तिमे समस्तीपुर जिलामे विद्यापति नगर ''स्टेशन'' नामसँ प़ख्यात अछि महाकविक समाधि पर विराजमान् आशुतोषभगवान गंगाधरक भब्य ''विद्यापति नामक शिवमंदिर एखनहुँ महाकविक यशोगान कय रहल अछी ।

जीव कान्त मिश्र, अड़ेर मधुबनी
महासचिव
विड्यापति परिषद् , सिन्दरी, धनबाद, झारखण्ड

नव वर्ष 2014,गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएँ!
जय माँ शारदा कैटरिंग
अम्बेदकर चौक मिर्जापुर, थाना:लदनियाँ, जिला: मधुबनी!
नोटः हमारे यहाँ शादी,विवाह,मुण्डन,उपनायन,श्राध एवं सभी अवसर पर भोजन एवं मिठाई बनाने का ऑडर लिया जाता हैं! साथ में बर्तन का आईटम जैसे:बडा टोप,छोटा नादी,बडा-छोटा कराही,डोल,कठौती, करछुल,मिठाई टरे,पानी डराम,तिरपाल व गैस चुल्हा ईत्यादि उपलब्ध हैं! बेटर का भी व्यवस्था हैं!
सम्पर्क करें: सुन्दर सिंह
मों:9631559011,7549783108

पवन विडियों कि प्रस्तूती
विडियों वाड़ा
S.P लाठईट साउण्ड हरिपुर चौक वेलाही
मधुवनी (बिहार)
M- 0750195200

फागुआक शुभकामना

मिथिलांचल टुडे परिवार सॅ समस्त पाठक आ जनता के फागुआक शुभकामना

भवदीय

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

डॉ. शेफालिक वर्मा

डॉ. किशन कारीगर

प्रतिवादक स्वर

हँ , हम खून केने छी , हम सासु बनय नही चाहैत छी. हम माय बनय नही चाहैत छी. ..तैं हम ई खून केलों . तीन तीन टा खून , हम नारी छी नारी ,ग्लानि भ रहल ऐछ हम नारी किएक भेलों ?नारी के किएक महान मानल गेल ? नारी प्रकृति के निकृष्टतम कृति छी तैं हम अपन नारी जीवन जीवा लेल नहि चाहलों. हम माय बनि जीवा लेल चाहैत छलों सासु बनि जीवा लेल नहि चाहैत छी जज साहेब ----सासु, ससुर, ननदी हम तीन तीन टा खून केलों . जज साहेब हम चाहितों ते भागि के जान बचा सकैत छलों अपन ..दहेजक कारन हिनकर सबहक बनाओल षडयंत्रक हमरा लग कोनो सबूत नहि ऐछ --कोनो पुतोह लग कोनो सबूत नहि रहैत ऐछ..कानून सबूत चाहैत छैक , साँच हो व फूसी हो . हमर सासु ससुर हमरा मारवाक षड्यंत्र केलनि एकर सबूत मात्र हम छी अओर हमर भगवान् ...सबुतक आधार पर चलयवाला आन्हर कानून टका पर सबूत अनैत ऐछ.आ ओही किन्लाहा सबूत पर अहाँ न्याय करैत छी जज साहेब ,--हमरा प्रतिकार लेवाक छल समाजक ठेकेदार सब स . हमरा फांसी दिय जज साहेब फांसी-----

सौनसे कोर्ट स्तब्ध . सब वकील पाथरक मुरुत , जनताक अपार भीढ़ के काठ मारि गेल छलैक . जज साहेब जेना हिमशिला सन श्वेत सर्द -लहास ---आंखि में अपन बेटाक ब्याहक मोल भाव नाचि गेल हो ...मुदिता हफैसी रहल छलीह . समस्त केशराशि कारी राति सन छिरिआयल छल . दुनू आंखि में घनघोर बरखा . दिनकरक ईजोत कृष्ण-पक्षक रंग ल लेलक. कारी कारी विषधर सांप सौनसे कोर्ट में कतेक काल धरि ससरैत रहल .....

मुदिता जीवनक मात्र बीस बसंत देखने छलीह आ ओ एहेन वीभत्स काज क बैस्तीह ई अकल्पनीय छल.आ मुदिता.. ?पलक बंद केने..बाबूजी , बाबूजी .अहाँ कते छी ,अहांक बेटी अहांक नाम पर कलंक लगा देलक . हत्यारिन नहि मुदा अहांक आदर्शक रक्षा केलक . बाबूजी, हम नारी जीवन नहि जीवी सक्लों . आ आंखि से जेना व्यतीत छलछला गेल.....

बेटा , आब अहांक ब्याह भ रहल ऐछ . आब पतिक घर अहांक मान मर्यादा ,जीवन मरण सब किछ अछि .हम सब ते अहाँ लेल पाहून रहब पाहून..---मुदिताक पिता बेटीक माथ पर हाथ फेरैत बजलाह ----

मुदिताक मोने अपन ब्याहक प्रति विरोध भाव उठहल-- जमीन जाल बेचि हमर ब्याह नहि करू बाबूजी / मुदिता बड भावुक छलीह सदिखन चिंतन में डूबल खाली अभावे टा ओकर पूंजी छल ,अभाव क्रांतिक कारन भ सकैत छै मुदा शर्त रही जायत छै विवेकक...पिताक गरीबी समाज में अभिशाप छल, आदर्शवादी कीरानिक जीवने की छै --तेज जलधार में कम्पित जलकुम्भी सन. बी ए पास क मुदिता बैसल छलीह जता देखू ओत टका ..एतेक मूल्य वृद्धि वरक भ गेल छल जे वरक बाप के मृत्युक अतरिक्त कोनो बाट नहि देखा परैत छल ..मुदी, रातुक भानस में की ऐछ
आटा लेल मदना के पठोने छी बाबूजी
ओह, कतेक महगी आबी गेल छै ---नमहर साँस लैत शिविर बाबु बजलाह

बाबु जी , एकटा बात ते अहाँ छोडिये देलों .....मुदिता अधर पर मैलछांह हंसी लय बजलीह ---ओही जमाना में बेटीक ब्याह ले लड़का मंगनी में भेटैत छल, आब मोलभाव कर पढ़ैत छै--मुदिक गप सुनी शिविर बाबु चौंकी गेल छलाह ---बाबूजी, एकटा बात पूछी ? लोग अपन बेटा के किएक बेचौत छैक ,कोना बेचौत छै..---शिविर बाबुक आंखि में रेतकण झिलमिला गेल..बाबूजी, माय कोना अपन बेटा के बेचौत ऐछ, बेटाक दाम लग्वैत ऐछ ..अपन पेट में नाओ मास जीवन दान दैत ऐछ, पालैत पोसैत ऐछ ओ माय कोना बेटा बेचवा लेल सहमत भ जायत ऐछ. बाबूजी, सौरभ ते छोट ऐछ की ओकरा केओ दस हजार टका देत ते बेचि देवैक अहाँ ?

मुदु,---भरि स्वर में बजलाह बताही भ गेल छी अहाँ, अंट शंट बजने जा रहल छी की भ गेल अहांके .....नहि बाबूजी, हम किनल बर से ब्याह नहि करब शिविर बाबु बेटीक पागल प्रलाप सुनी ओहिठाम से उठी गेल छलाह .....ओही राति ओ अपन माँ बबुजिक गप सुनने छलीह ----------मुदितक ब्याह ओहें घर में करब जे आदर्श हो , ओ बड भावुक ऐछ विद्रोही प्रकृति के---आ बाप बेटीक गप सुनी माई दांत कासी लेने छलीह..एही बेटीक भविष्य की ऐछ ईश्वर ! माय आशंकित

सब दिन बेटा जकां पोसने छी , आदर्श आ सिधांतक शिक्षा

देने छी , माथ पर गृहस्थिक भार पढ़तैक अपने शान्त भ जेतीह..

आतिश बाबुक बेटा सप्तक अहाँ के केहेन लागैत ऐछ .....बाबूजिक स्वर सुनी मुदी चोंकि गेलीह --------

–आतिश बाबु छोट मोट रोजगार करैत छथि , बेटा सेहो ओही रोजगार में लागल ऐछ...निक खैत पिबैत घर . सिधान्त्वादी लोक , ...मुदा ओ बड टका माँगता मायक आशंका

टका....हँसैत शिविर बजलाह .....श्दहेज़ विरोधी संघक श् अध्यक्ष छैथ. दहेज़ प्रथा हन्तेवा लेल जी जान से लागल छैथ ..

ओ तखन ते बड निक . अपनो विवाह एकटा गरीब घरक लड़की से केने रहैथ आतिश बाबु के के नहि जनित ऐछ .....

हँ से ते ठीके हमहूँ जनैतछी. ....मायक स्वर मुदिताक कान में जायत रहल..हुनकर ससुरक घर दुआरी , जगह जमीन सब बिका गेल रहनि, हँ दहेज़ नहि नेने छलाह एही में कोनो शंका नए.हँ, सप्तक मायबापक परम आज्ञाकारी आ सुशिल ऐछ ..

मुदिताक आंखि में सप्तकक रूप नाच लागल आदर्श आ सिधांतक गप सुनी ओकर ह्रदय सप्तके लेल नहि, सम्पूर्ण परिवार लेल पूजा पुष्प सन समर्पित होयत रहल .....

आ एक दिन पालकी पर बैसी कनिया बनि मुदिता अपन सासुर आबी गेलीह

.....खाली कनिए टा ? सर सामान , दान दहेज़ ....आही रोऊ बा ....सासुक प्रथम स्वर सुनतही मुदिता घोघ तर से देख चाहली....माँ, भौजी के गहनों नैहरक तेहन सन नै ऐछ .....मुदिताक अंग परिक्षण करैत छोटकी ननदी बाजी उठलीह .....बाबूजी हद्द क देलखिन माँ .....मुदिताक समस्त तन तिक्त गंध से आवेष्टित भ गेलैक ..सासुरक प्रथम स्वागत गान ! मोटा जकां कोन में बैसल मुदिता

माँ, फ्रिज नहि, टी वी नहि , पलंग सोफा किछ ते नहि ..कतेक उछाह छल भैयाक ब्याह में ई सब आओत

सीपी, एखन तोहर बाबूजी के पुछैत छी . दहेज़ विरोधिक सभापति छैथ समाज में की घर में ?अपने घर डाहि हम आइग नहि तापब... एकटा बेटा आ .....पुन: मुदिता डीसी तकैत आग्नेय सवारे बजलीह .....बैसल की टुकुर टुकुर तकैत छी, हम भाढ़फोरही ताढ़फोर्ही नै बूझैत छी ..जाऊ भानस भात बनाबू , काज धाज करू ..आ की माय एहो सब नै सिखेलक.....

अपरिचित घर ,अनचिन्हार परिवेश में मुदिता निस्सहाय जकां सप्तक के ताकि रहल छलीह मात्र चारि दिनक जकरा से परिचय छल. ओ ते माय बहिनिक उक्ति सुनी कखन घसकि गेलैक कियो नहि बुझलक . मुदिता चुपचाप भनसा घर दिसि चली गेली .....हे पटोर पहिरी भनसा में नहि जाओ , आंखि से देखने छलिये पटोर .....सीपी ,एकटा नुआ असगनी पर से दय दहीक, फेरी लेतैक.....एकटा मैलछांह नुआ हाथ में नेने मुदिता कांपी रहल छलीह

छोलनी करछुलक मध्य ....साँझक कजरायल आंखि नोरा गेल, आकास में त्रितियाक चान विधवाक टूटल चुढ़ी सन लटकल छल .....मुदिता सोचौत रहलीह .....कतेक सपना लोक देखैत ऐछ ..सपना कतेक विचित्र शब्द थ्हिक सपना आंखि खुलल आ टूटी गेल..नहि नहि सपना के पक्ढ़वाक चेष्टा नै करवाक चाही ...परछाही कतहु पकरहल जाय .....बाप रे एतेक देर से भंसा घर में की अपन देह डाहि रहल छी ----सासुक कर्कश स्वर ----माय बाप भिखमंगा जकां बेटी के सांठी देलक आ बेटीक मलार कतेक!...

एही परिवेश में दिनक पंछी उढ़ैत रहल विद्रोही मुदिताक सब स्वर शांत भ गेल. सब उत्ताप पर हिमपात भ गेल ...सप्तक राति के अवैत छल आ भिनसर होयताही निकलि जायत छल. मुदिताक मोन से ,ओकर सुखदुख से ओकरा कोनो मतलब नहि छल . ओ सरिपो , माता पिता क आज्ञाकारी छल. आतिश बाबु बड पैघ समाज सुधारक छलाह , हुनकर नाम ,प्रतिष्ठा छल, दीया तर अन्हार.----

–अहाँ शिविर बाबु से की कही विवाह थ्हिक केने छलों?कोनो सर सामान घर में नहि आयल .समाज सुधारवाक चक्कर में अपनाही घर में आगि लगा देलों.

हम कहने छलों सिपिक माय, इशारा में कतेक बात कहने रही ....हम टका पैसा नहि लेब, एकेटा बेटा ऐछ ओकर माय के कतेक सुख सेहनता छै ----------भाढ़ह में जाय अहांक कहब सीपीक माय अगुता गेलीह अहाँ टका नहि लेलों ते अहांके किछ नहि भेटल

अहाँ स्थिर राहु, टका ते नाहीये भेल , टीवी ,फ्रिज किछ ते नहि भेल..... आतिश बाबु सोच लगलाह

कहू ते एकेटा बेटा , आब ते हमरा घर में कहियो ई सब नहि आयत .....मुदिताक सासु दु:ख आ वेदना से कानय लगलीह.....स्थिर रहु, हम उपाय सोचौत छी.

घरक एहेन वातावरण में मुदिता देरायल हिरनी जकां राति दिन चौन्कल रहैत छलीह ,डेरायल सन जंगली भेढ़िया सबहक मध्य एकटा मृग शावक , माय बापक अल्हढ़ ,चंचल ,विद्रोहिणी मुदिता , घरक कण कण में ओकरा षडयंत्रक आभास होइत छले. ..डेरायल, चौन्कल भयभीत.....

ओही राति सप्तकक बाहीं पर सुतल मुदिताक आंखि में नीन नहि छल. राति दिन खुजल आंखि से ओ भयंकर सपना देखैत छलीह .....की भ जायत ऐछ अहांके ,नहि ते अपने सुतैत छी नहि ते हमरा सूत दैत छी. मुदिताक चोंकब से अर्धनिद्रा में पडल सप्तक खौन्झा उठैत छल. .....नीन नहि अबैत ऐछ –जेना अपना आप से बजलीह

धन्य छी महाराज , निन्न नहि अबैत ऐछ ते चुपचाप पडल रहु , चोंकि चोंकि तिरिया चरित्त नहि देखाऊ . मुदी दिसि पीठ कय सप्तक बढ़बढ़हैत रहल--------मुदिता लहुलाहान भ गेलीह . तिरिया चरित्त? भावुक मोन कछोटी उठल तिरिया चरित्त केकरा कहैत छैक ,के बनोलक एही शब्द के ? पुरुष चरित्त केओ किएक नहि बजैत छैक सबटा वेद-पुराण , रामायण गीता सब टा पुरुखक लिखल ऐछ तैं ई पक्षपात ! कतेक असहाय हम सब छी लंका से सीता के आनि राम अग्निपरीक्षा सीता क लेलानी , मुदा एको बेर सीता प्रतिवाद नहि केलीह,पत्नी से अलग रामो ते छलाह ओ किएक ने परीक्षा देलनि रामायण पुरुषक लिखल छल. ---------निस्तब्ध्ह राति , कतो कोनो मर्मर नै , मुदिता चुपचाप पडल , एही आँखिक नोर बही ओही आंखी में जाय सागर बना रहल छल..सब देशक लोक कहने ऐछ तिमसजल जील दंउम पे वउंद कियो स्त्री के चीन्ही नै सकल. स्वयं स्त्री माय बनि बेटा बेचौत ऐछ, ,पुतोह बनि जरैत ऐछ आ बची जायत ऐछ ते सासु बनि जरावैत ऐछ. बेटा क माय बनि की भ जायत छै स्त्री के ?ई स्त्री स्वातंर्त्य , नारी विमर्श ई सब हथिक दांत छी, पहिने स्वयं स्त्री के बदल पडत , अपन अधिकार, अपन शक्ति के चिन्ह पडत.....असहाय मुदिता आक्रोश से भरल छलीह . नाना प्रकारक विचारधारा ओकर मानस मंथन क रहल छल. पतिक प्रेमिल स्वरों से वंचित , कोनो माय बाप अपन बेटीक ई स्थितिक कल्पना क सकैत ऐछ कतेक बेटी अपन सासुर में एहिना राति बित्वैत हेती. एकटा माय दोसरक बेटी गंजन करैत ऐछ मुदा स्वयं ओकर बेटीक भविष्य ? ...नींद नहि छल ओकर आंखि में ...राति तितल भिजल, नीरवता एहेन जे खिड़की से अवैत हवाक स्वरों वाचाल छल. मुदितक ह्रदय में एकटा आशंका ..एकटा संशायक मेघ , जेना कोनो प्रलयंकर झंझा आबे वाला हो , समस्त क्षितिज अंधकार से आच्छादित .....अचक्के किछ स्वर जेना ओकर कान में आब लागल...एकटाअनजान भय से ओकर छाती कांपे लागल .ओकर समस्त इन्द्रिय सजग सचेतन भ गेल ओ ओही शब्द सब के आत्मसात करवाक प्रयास कर लागल .....हमहूँ एयैह सोचौत छी ..सासुक स्वर कान में पडल ..ओ आर सजग भ गेलीह ...शिविर बाबु ते सब सुख मनोरथ डाहि देलनि ..विनिश बाबुक बेटी से बात चलाबी...विनिश बाबु , नगरपालिकाक चेयरमेन देब लेब ते खूब करताह, मुदा हुनका बेटी के आंखि चमकैत रहैत छैक...दुनू टा आंखि झिप झिप करत ऐछ जेना कनखी मारैत होई... .....सीपीक माय बजली

निक आंखि वाली आन्लों ते की भेटल ....ई ते सांचे , मुदा, एही कनियाक की करब , ई ते हल्ला गुल्ला मचाय सबटा प्रतिष्ठा माटी में मिला देत .....एकरो उपाय छैक मुदिताक सर्वांग कांपी रहल छलैक , सांस जोर जोर से चली रहल छल .स्वर अस्पष्ट भेल जा रहल छल. पारामार ऐछ , हँ पारामार ते दोकाने में अपन पडल रहैत ऐछ.

लोक के की कहवैक..लोक के की..कही देवैक ..आत्महत्या क लेलीह..दोसर गोटे से फंसल छलीह , आय पकड़ा गेलीह. .....वह.. ई ते उत्तम ..हम ततेक जोर से चिकरी बाजब जे सब केओ हमर कथन के साँच बुझी जायत मुदितक सासुक स्वर में खुशी छल

दोसर गोटे से फंसल ...पारामार ..मरणोपरांत चरित्र पर दोषारोपण .... आवेश आ उत्तेजना से कांपी रहल छल मुदिता . आतिश बाबुक ऑफिस घर में तेबुलक दराज में रखल लोडेड रेवाल्वारक ध्यान आबी गेलैक ----- माय्बापक आज्ञाकारी पुत्र एही सब से अनभिज्ञ निचिं सुतल छल -------एकटा आवेश , एकटा उत्तेजना एकटा ,एकटा मूर्च्छना में मुदिता ऑफिस घर से रिवाल्वर निकलि यंत्रचलित जकां सासु ससुरक समक्ष ठाढ़ह भ गेलीह .....बहुत भेल बाबूजी , अहाँ एहेन समाज सुधारक के प्रतिष्ठाक संग ज्जेनाई , एही दुनिया से जेने निक छै, आ एक गोली ससुरक छाती पर, माय, अहाँ माँ शब्द पर कलंक छी , नारी रूप पर कलंक छी, नारी भ नारी के प्रतिष्ठा नहि द सकैत छी.....दोसर गोली माय के छाती पर , सीपी !..पैघ भ अंहु माय बनब , सासु बनि पुतोहके पारामार खुआयब तैं ई अहांक लेल...

तिनु लहाश ताढ़फर्हा रहल छल सप्तक केराक भालेरी जकां कंपित कखन दरवज्जा पर आबी ठाढ़ह भ गेल छल.....नहि अहांके किछ नहि कहब अहाँ माता पिताक आज्ञाकारी छी अवश्य , मुदा हमर सोहाग छी, एही सोहागक कारन सीता अपन सासु ससुर, , महल दोमहला सब के त्यागी के रामक संग वन चली गेल छलीह .....बस अहाँ अपन कलंकक संग जीवु.....

✍डॉ. शेफालिका वर्मा

अमित मिश्र जीकेँ तिनटा विहनि कथा

१.सहकर्मी

''मैडम, कहि दैत छी ।आब बड़का-बड़की फसि जेतै ।सम्हारि लिअ बेबस्था ।''
''यौ सर, आइ-काल्हि अहाँ एते तमसाइ किए छी?''
''तमसैयै नै तँ की झालि-मृदंग लऽ गीत गाबियै !बुझू तँ एहनो कतौ भेलैए।''
''की भेल से तँ कहू?''
''ओ पाठक जी सदिखन बैसल कुर्सी तोड़ैत रहै छथि आ हम कड़गड़ ड्यूटीपर लागल रहै छी । बुझू तँ एक्कै दरमाहापर एतेक पैघ अन्तर!''
''आलसी छथि, की करबै ।अनेरे बीपीज्ज हाइ करै छी ।लोक दियाद-वाद संग एते अरारि करैत छै ।ई कोनो दियाद छथि जे लड़ाइ ठानै छी?''
''यै मैडम, सब अहींक कएल-धएल अछि ।ओ हमर दियाद नै छै तँ की भेलै, सहकर्मी तँ छै ने, अरारि तँ हेबे करतै।''

२.कमाइ

''गै छौड़ी, हम तोहर सच्चा प्रेमी छी।''
''तँ हम की करी।''
''बेसी किछु नै, तूँ हमर प्रेमिका बनि जो।''
''ताहिसँ फायदा''
''फायदा यैह जे दुनू गोटा वियाह कऽ लेब। हम दस हजार टाका कमाइ छी। तूँ हमर करेजक रानी बनि, घर बैसल टी?भी? देखैत रहिहें आ हम कमा कऽ नीक-नीकुत खुआबैत रहबौ।''
''रौ बज्जरखसुआ। नाँगरि झारि एतऽसँ भागलें की नै। आजुक जमानामे पढ़ि-लिख कऽ तोरासँ बेसी हम कमाएब। तोरा एहन कमाइपर घमण्ड करै बला छौड़ा सब सतर्क भऽ जो किएक तँ आजुक लड़की आत्मनिर्भर छै। बुझलें ने।''

३.मरबाक इच्छा

आपरेशन थियेटरसँ एक्कै टा आवाज बहराइत छल ''हमरा मरि जाए दिअ ...जाउ अहाँ सब...मरऽ दिअ ... ।
बेडपर तीस वर्षक युवक सैनिकक ड्रेसमे पड़ल चिचियाइत छल, ''मरऽ दिअ...।''
डॉक्टर- ''एखन मात्र एकटा गोली लागबसँ मरब चाहैत छी, जखन की सीमापर दस-दस गोली लागला बादो हँसैत रहैत छलौं आइ एतेक दर्द किएक।''
सैनिक जबाब देलकै ''सर, ओहि बेर दुश्मन गोली मारने छल तेँ बेसी दर्द नै भेलै, मुदा...एहि बेर तँ अपन लोक मारलक उहो पाछूसँ तेँ दर्द असहनिय भऽ गेल अछि आ मरबाक इच्छा जागि गेल अछि।''

अमित मिश्र
करियन, समस्तीपुर

कविता

घुइर चलू मिथिला

घुइर चलू घुइर चलू मैथिल
अपन मिथिला देश
बाट जोहै छथि माए मिथिला,
आँचरमे लऽ स्नेहक सनेश।
उजइर पुजइर गेल छै ओकर
सभटा खेत पथार
गाम घर सभ भक्क पड़ल छै
डिबिया बाती नै जरै छै
देख ई दशा
माए मिथिलाकेँ फाटै छै कुहेश ।...
जाहि धरापर बहैत अछि
सात सात धार
आई ओहि धराकेँ छाती अछि सुखाएल
खाए लेल काइन रहल अछि नेन्ना भुटका
माइर रहल छथि माए मिथिला चित्कार ।
देखू देखू हे मिथिलावाशी केहन आएल काल
देब भूमि तपोभूमि
आई बनल आतंकक अड्डा
जतऽ कहियो पशु पंछियोँ वाचौत छल शास्त्र
आई ओहि धरासँ सुना रहल अछि बम बारुदक
राग ।
हे मैथिल!
दोसरक नगरी रौशन केलौँ
छोइड़ अपन देश
आबो जँ नै आएब मिथिला
तऽ भऽ जाएत मिथिला डीह
कुहैर कुहैर क कहैथ माए मिथिला ई..
चलू चलू यौ मैथिल अपन मिथिला देश
फेरसँ बनेबै ओहने मिथिला
देखतै देश विदेश..जय मिथिला

✍गणेश कुमार झा 'बावरा'

कोना मदर डे हैप्पी ?

आब केहन जमाना आबि गेल
बर्खमे एक्के दिन
माएकेँ इआद करै छी,
मदर डेकेँ नामपर
माएकेँ इआद करै छी
की हुनक सुखएल घाकेँ
काठी कए कह्य जगाबै छी।
हम बिसैर गेलहुँ
अपन माएकेँ
मुदा ओ नहि बिसरली,
जाहिखन हुनका भेटलनि
सुन्दर कार्ड ''हैप्पी मदर डे'' लिखल
भेलनि करेजा तार-तार
नोर टघैर कऽ
अपन स्पर्शसँ
गालकेँ छूबैत
हुनक करेजा तक चलि गेल
आ करेजामे बंद
महामाएकेँ कोंढ़सँ
सोनितमे डुबल शव्द निकलल
आह !
की ई हमर ओहे लाल ?
जेकरा पोसलहुँ खूनसँ
पाललहुँ अपन दूधसँ
अपने सुतलहुँ भिजलमे
ओकरा लगेलहुँ करेजसँ।
आइ
चारि बर्खसँ भेटल नहि
रहि रहल अछि परदेश
अपन कनियाँ सँग
बिसरि गेल बिधवा माएकेँ
आइ अकस्मात माए इआद एलैह
ई सुन्दर चिट्ठी (कार्ड) पठेलक
मुदा की लिखल ?
''हैप्पी मदर डे''
नमहर साँस लैत
हुनक मोन आगू बाजल
जखन मदरे नहि हैप्पी
तँ कोना
मदर डे हैप्पी
तँ कोना मदर डे हैप्पी ?
*****

जगदानन्द झा 'मनु'

गजल

हेतै खतम गुटबाज बेबस्था
बनतै सभक आवाज बेबस्था

भेलै बहुत चीरहरणक खेला
राखत निर्बलक लाज बेबस्था

देसक आँखिमे नोर नै रहतै
सजतै माथ बनि ताज बेबस्था

मिलतै सभक सुर ताल यौ ऐठाँ
एहन बनत ई साज बेबस्था

'ओम'क मोन कहि रहल छै सबकेँ
करतै आब किछु काज बेबस्था

(दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-लघु, दीर्घ-दीर्घ-लघु-दीर्घ, दीर्घ-दीर्घ
प्रत्येक पाँतिमे एक बेर।
2221-2212-22)

ओम प्रकाश झा, देवघर

जकरेसँ भतबरी तकरेसँ मीत सन
हाँसुक बिआहमे खुरपीक गीत सन

सुनबाक फूसि छै आदति जँ ओकरा
बाजत जँ सत कियो लगतैक तीत सन

छुच्छे करेज छै भावक अकाल बड़
बनि गेल आब ई न%वयुगक रीत सन

हारल जँ लड़ि क% नै ओ हारि हारि छै
लागैछ हारियो ओ मधुर जीत सन

पाहुनसँ भेल छै दलमल दलान जे
नमहर दलान ओ लागैछ बीत सन

जेठक दुपहरियोमे बोल मधुरगर
अनमन लगैत छै फगुआक शीत सन

चहुँदिस गजलसँ छै बरसैत ''नवल'' यौ
मधुरिम सिनेह नवकनिआँक प्रीत सन

*मात्राक्रम- 221+212 (दू बेर सभ पांतिमे)

पंकज चौधरी (नवलश्री)

पाठक आओर रचनाकारसँ निवेदन जे समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, समसमायकि, कला, संस्कृतिसँ जूरल अपन मौलिक वा अप्रकाशित आलेख, प्रतिक्रिया आ नीक बेजए अपन सुझाब मात्र मैथिलिमे मिथिलांचल टुडेकेँ पठाबथि । चयनित आलेखपर समुचित राशी पठाऔल जाएत ।
अपन रचना एहि पतापर पठाबि
सम्पादकीय कार्यालय-बी-2/333, तारानगर, सेक्टर-15, ओल्डपालम रोड, द्वारका, नई दिल्ली-78,
फोन न0- 011 65858937, फेक्स-011-25335034
E-Mail- mithilanchaltody12@gmail.com

मिथिलांचल टुडे केर मधुबनी कार्यालयल खूजल

मिथिलांचल टुडे केर मधुबनी कार्यालयक उदघाटन 21 जनवरी 2014 कऽ संपन्न भेल. मुख्य अथिति डॉ नवीन चन्द्र ठाकुर (सेवानिवृत प्राचार्य) फिता काटि स्थानीय मधुबनी कार्यलय केर शुभारम्भ केलनि। ओ कहलन्हि जे मिथिलाक ह्रदय स्थलि मधुबनीमे ''मिथिलांचल टुडे'' केँ स्थानीय कार्यालय देखि अति प्रसनत्ता भेल। आब लोक देश- विदेश, सहित कतेको क्षेत्रिय खबैर मिथिलांचल टुडेक माधयमसँ पढ़ि सकत। मधुबनी कार्यालय केर शुभारम्भक समय डॉ नरेश मोहन झा, डॉ सतीश झा, सुमन जी, रिंकी कुमारी सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति आ स्थानीय जनसाधारण लोक सब उपस्थित शोभा बढ़ेलनि।

लदनियांसँ शिवनाथ यादव, शैलेन्द्र प्रसाद (खाजेडीजसँ) सेहो उपस्थित रहैत। मधुबनी कार्यलयक सब बात बेबस्था चुनु झा, सोनू झा, शिवनाथ यादव सन युवा विद्यारती सब केलनि। हिनका लोकनिक आलावे जीवन कुमार, डॉ मंटू सागर, श्याम कुमार, सुशील जी (खुटौना) चंदेश्वर कुमार, मनोज कुमार , राम गुलाम सिंह, प्रमोद कुमार (बाबूबरही)सँ आयल रहथि। मुख्य अतिथि उदगार व्यक्त करैत कहलैन जे मिथिलांचल टुडे एकटा उत्कृष्ट मैथिलि पत्रिका अछि जे आब सर्वत्र उपलब्ध भऽ रहल अछि।

कथा गोष्ठी

81 म "सगर राति दीप जरए," कथा गोष्ठीक आयोजक, मैथिलीक श्रेष्ठ आ स्थापित गजलकार, कथाकार श्री ओम प्रकाश झाजीसँ भेटवार्ता

81 म सगर राति दीप जरए, कथा गोष्ठीक आयोजक, मैथिलीक श्रेष्ठ आ स्थापित गजलकार, कथाकार श्री ओम प्रकाश झाजीसँ मिथिलांचल टुडेक विशेष संवाददाता जगदानन्द झा 'मनु'क ओनलाइन भेटवार्ता।

मनु, "प्रणाम ! आ संगे संग मिथिलांचल टुडे परिवार दिससँ बधाइ आ साधूवाद जे अपने मैथिली साहित्यक विकासमे नित्य नव-नव डेग लए आगू बढ़ि रहल छी।"

ओम प्रकाशजी, "प्रणाम ! बिना अपने सभक समर्थन आ सहयोगकेँ कोनो डेग बढ़ेनाइ सम्भब नहि अछि।"

मनु, "मिथिलांचल टुडेक मार्फत मैथिलीक सुधि पाठक अपनेसँ 'सगर राति दीप जरए' कखन आ किनका द्वारा शुरू कएल गेल से जानैक इक्षा रखैत अछि।"

ओम प्रकाशजी, "ई आयोजन स्व0 प्रभाष चन्द्र चौधरीजी द्वारा लगभग दू दशक पूर्व शुरू कएल गेल छल । ऐ आयोजनमे हुनक संग जीवकांत आ अन्य कथाकार लोकनि छलाह जे मैथिली कथा साहित्यकेँ नव दिशा देबामे सफल भेल छलाह।"

मनु, "कोना आ कतेक समय बाद एकर आयोजन होइत छैक ?"

ओम प्रकाशजी, "साधारणत: तीन मासपर एकर आयोजन होइत छैक आ एकर निर्णय आयोजनक दौरान भऽ जाइत छैक जे अगिला आयोजन कतय हएत।"

मनु, "एहि आयोजनक खर्चा, व्यक्तिगत रूपे किनको द्वारा, कोनो सरकारी वा गैरसरकारी संस्था द्वारा, कोना होइत अछि ?"

ओम प्रकाशजी, "एकर खर्चा आयोजक दिससँ कएल जाइत छैक। कोनो सरकारी वा गैर सरकारी संस्थासँ खर्चा लेबाक रेबाज नै छै। सम्पूर्ण रुपे खर्चा आयोजक करैत छथि।"

मनु, "पटना वा आन कोनो मैथिली अकादमीसँ कतेक सहयोग भेटरहल छैक ?"

ओम प्रकाशजी, "कोनो वितीय आ आन सहायता नै भेट रहल छैक आ नै कोनो वितीय सहयोग लेबाक अपेक्षा अछि। किएक तँ परिपाटीक मोताबीक खर्चा आयोजककेँ करऽ पड़ैत छैक।"

मनु, "एहिमे सम्लित सम्माननीय कथाकार लोकनिकेँ आमन्त्रण वा कोनो सूचना देल जाइ छनि की ओ सभ अपने अबैत छथि ?"

ओम प्रकाशजी, "इंटरनेट, दूरभाष आ पत्रक माध्यमे लोककेँ सूचना पठाओल गेल छन्हि। ओना ऐ आयोजनमे बिना सूचनाक सम्मिलित भेनाई वर्जित नै छैक किएक तँ पछिला आयोजनमे सार्वजनिक हकार दऽ देल जाइत छैक।"

मनु, "की एहिमे कोनो कथाकार आबि सकैत छथि अथवा कोनो योग्यता वा मापदण्डक निर्धारण छैक ?"

ओम प्रकाशजी, "कोनो कथाकार आबि सकैत छथि, कोनो योग्यता वा मापदण्ड नै निर्धारित छैक।"

मनु, "की ई मानल जेए जे सगर राति दीप जरए कथा गोष्टीसँ नव-नव कथाकार सभकेँ हुनका अपन लेखनीमे निखारैक अबसर आ अपनाकेँ दुनीयाँक सामने आनैमे मददगार साबित भऽ रहल अछि ?"

ओम प्रकाशजी, ''हाँ, ई गप्प अपने बेस कहल, ऐ आयोजनक मार्फत ढेर रास नव-नव कथाकार सोझाँ आबि रहल छथि। प्रत्येक आयोजनमे कोनो नै कोनो नव कथाकार चमत्कारी रुपे कथा साहित्यकेँ भेटिए जाइत छैक। तैँ ई कहलामे कोनो हर्ज नै जे ई आयोजन नव कथाकार सभकेँ दुनियाँक सोझाँ आनबामे मददगार साबित भऽ रहल अछि।''

मनु, ''आइ काल्हि मैथिली साहित्यमे गुटबाजीक प्रचलन बहुत बढ़ि गेल अछि। बहुत रास लोग एहन-एहन नीक आयोजन सभकेँ अपन स्वार्थ कारणे असफल करैक चेष्टामे लागल रहैत अछि, की एहन तरहक समस्याक सामना अहुँ सभकेँ करए परेत अछि ?''

ओम प्रकाशजी, ''देखियौ, गुटबाजी जँ प्रगतिशील समाजक निर्माण हेतु होइत छैक तँ कोनो हर्ज नै मुदा समाजकेँ पाछाँ ढकेलबाक प्रयास करएबला गुटबाजी अहितगर होइत छैक। हमरा ऐ गुटबाजीसँ कोनो असुबिधा नै भेल अछि आ नै हएत किएक तँ समाजक आशीर्वाद हमरा संग अछि।''

मनु, ''एहि तरहक गुटबाजी साहित्य विशेष कए मैथिली साहित्य लेल कतेक अहितगर अछि?''

ओम प्रकाशजी, ''साहित्यक मुख्य काज भाषाक संग समाजक प्रगति सेहो अछि। जँ गुटबाजी प्रगतिशील समाज आ साहित्य बनेबामे सहायक होइत छैक तहन तँ गुटबाजी कोनो अहितगर नै छैक। मुदा समाज वा साहित्यकेँ पाछाँ ढकलै बला गुटबाजी हरदम खराप ओइत छैक।''

मनु, ''ई 80-81 कि मामला अछि ?''

ओम प्रकाशजी, ''ई 80-81 आयोजनक संख्या बतबै छैक। हमरसँ पूर्व निर्मलीमे श्री उमेश मंडल जीक द्वारा 80 म कथा गोष्ठीक आयोजन भेल छल। हम 81 म कथा गोष्ठीक आयोजन देवघरमे कऽ रहल छी।''

मनु, ''अपनेसँ गप्प कए कऽ बड्ड नीक लागल। माँ भगवतीसँ एकर सफल आयोजनक कामना करैत, अन्तमे अहाँक मिथिलांचल टुडेक द्वारा नव रचनाकार अथवा कथाकारकेँ लेल कोनो मार्गदर्शन वा सुझाव।

ओम प्रकाशजी, ''धन्यवाद ! नव रचनाकार आ कथाकारकेँ ई धेआनमे राखबाक चाही जे साहित्य समाजक ऐना होइत छैक तैँ समाजक समस्या साहित्यक केंद्रमे रखबाक कोशिश करबाक चाही। समाजकेँ प्रगतिशील बाटपर चलेनाई सेहो नव साहित्यकारक संग सभ साहित्कारक धर्म अछि। प्रगतिशील समाज आ साहित्यक निर्माण साहित्यकारक सफलताक निशानी थिक। हमर शुभकामना सब नव साहित्यकारक संग अछि आ हम कामना करैत छी जे कलमक ई सिपाही लोकनि प्रगतिशील समाजक निर्माण करबामे सफल हेता।''

नव वर्ष 2014,गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी की बिहार नगर पंचायत शिक्षक संघ की ओर से सभी लदनियाँ प्रखंड वासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ!

[कोषाध्यक्ष]

राजदेव मंडल

बिहार नगर प्रारंभिक शिक्षक संघ लदनियाँ

मो:9801385089

नव वर्ष 2014, गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी की सम्पुर्ण लदनियाँ प्रखंड के सभी शिक्षकों व शिक्षिकाओंको हार्दिक शुभकामनाएँ!

प्रधानाध्यापक:

रामप्रसाद रमण

उ०म०वि० सिपहगिरी

मो:8002631855

महिला दिवसपर विशेष

आउ मनाबी "महिला दिवस"

आन बेरक जकां फेर महिला दिवस आबि गेल। आब ई तँ बुझले अछि जे लोग बाग महिला सबकेँ बधाइ दए जेथिन कोनों संस्थाक तरफसँ विशिष्ट महिलागनकेँ पुरस्कार ,गुलदस्ताक आदान-प्रदान कयल जेतैक। बस, समाज अपन कर्तव्यक इतिश्री मानि जाइत अछि।

दरअसल महिला दिवस कोनों एक दिन अथवा एक वर्ष मनाबय वला पर्व नही अछि ई तँ सतत चलय वला एकटा विचार -व्यवहार होबाक चाही। हम सब एक दिनक लेल महिला दिवस मना तँ लैत छी मुदा दोसरे दिनसँ बल्कि ओहो दिन ओहिना महिला सब प्रताड़ित होइत छथि दहेज, हत्या, बलात्कार, वैश्यावृतिमे कोनो कमी नहि देखल गेल अछि । बल्कि दिनो दिन महिलाक प्रति अपराध बढ़ले जा रहल अछि। तखन उपाय की ?

अपन देशक कानून महिला सबकेँ बराबरिक अधिकार देने छैक मुदा ओहि कानूनकेँ व्यवहारमे लाबएक प्रयास केरब तँ हमरे सभक कर्तव्य थिक। समाजमे एखनो महिलाकेँ दोयम दर्जा देल जाइत अछि। बेटीकेँ नेनपनेसँ सिखाएल जाइत अछि जे ओ पुरुखसँ हीन अछि। बुच्ची दाई पढाईमे कतबो कुशाग्र किये ने होथि, अंग्रेजी स्कूलमे बुचनेकेँ नाम लिखाओल जाइत छैक। घरमे जँ माछ रान्हल गेल तँ माछक मूडा हुनके परसाई छनि, बेचारी बुच्ची दाई केँ पूछीयेसँ संतोष करय पड़ईत छनि ।

ई शोधक विषय होबाक चाही जे पैघ भेलापर ओहे बुच्ची दाई, अप्पन बेटी संगे ओहने व्यवहार किएक करैत छथि।एखनो युवा लड़कीकेँ सबसँ अधिक संघर्ष अपने घरसँ करए पडैत छैक। माए ,पितियाइन दादी, सब ओकर पहिरब ओढब, बात -विचार, कत्तौ गेनाई-एनाई, सबपर आपत्ति करैत छथिन किएक ने हम महिला सब अप्पन बेटी सब के एहन माहौल दी ,जाहिमे ओ अप्पन व्यक्तित्वकेँ सर्वांगीन विकास कए सकए, अप्पन भविष्यक सपना साकार कए सके सही मायनेमे महिला दिवस तखने सार्थक होयत।

नीता झा , भागलपुर

फ़िल्म

मैथिली सिनेमाक बढैत डेग़.....

दरभगा स्थित मूवा प्लनेटम मैथिली फ़िल्म '' घाघ म चान्द''क यथासमय सफ़ल प्रदर्शन मैथिली सिनेमा लल शुभ संकेत अछि। ई फ़िल्म मैथिली फ़िल्मक समक्ष सबसं पैघ समस्या- हॉलक समस्या-केर मिथकके तोड़यमे महत्वपूर्ण भूमिका निभौलक अछि । हॉलमें दर्शकक उपस्थिति एहि बातक द्योतक अछि जे समुचित रुपमें प्रदर्शित फ़िल्म, नीक अभिनय, सुन्नर गीत संगीत आदि भेला पर मैथिली सिने प्रेमीक संख्या कहियो कम नहिं भए सकैत अछि। एखन धरि डिब्बामें बन्न बहुत रास फ़िल्म अछि। आब समय आबि गेल अछि, ओहि फ़िल्म सबके हॉल धरि आनू। दर्शक भेटबे करत।

भट्ट कैम्पक सिनेमाक इंतजार आलियाकेँ

फ़िल्ममेकर महेश भट्टकेँ बेटी आलिया भट्ट एखन धरि अपन होम प्रोडक्शनकेँ सिनेमामे काज नहि कएने छथि। आओर एहि बाबत हुनक कहब छनि जे ओ ताबैत धरि इंतजार करती जाब धरि हुनक कोनो नीक सिनेमा नहि भेट जानि। ओ वॉलिवुडमे अपन कैरियरकेँ शुरुआत करण जौहरक सिनेमा ''स्टूडेंट ऑफ़ द इयर''सँ कएने छथि। ओना ओ मुकेश भट्टक सिनेमा 'संघर्ष' मे प्रीति जिंटाक नेनपनक भूमिका कएने छथि। सिनेमामे आबैक बादओ तीनटा नम्हर बैनर्सकेँ सिनेमा साइन कए चुकल छथि। मुदा एहिमे सँ एकौटा सिनेमा 'विशेष फिल्म्स' केँ नहि अछि।

आलिया कहैत छथि ''हमरा विशेष फिल्म्सकेँ तरफसँ कोनो फ़िल्मक ऑफर नहि देल गेल अछि । ओ सभ दोसर दोसरकेँ 100 करोड़ दऽ दऽ कऽ लाँन्च कए रहल छथि मुदा ठठ्ठा छोरि दि तँ हमरा लगैत अछि जे ओ सभ नीक समयकेँ इंतजार कए रहल छथि। समय एवापर एहना होएत आ जरुर होएत, धमाकेदार होएत।''

आलियाक अगिला सिनेमा इम्तियाज अलीक निर्देशनमे बनल ''हाइव'' अछि। एहि सिनेमामे ओ दूटा गीतो गेएने छथि जेकरा ए0 आर0 रहमान तैयार केने छथि। हलांकि ओ गायकीकेँ कैरियर केर विकल्पक रूपमे नहि देख रहल छथि। ओ चाहैत छथि जे गायकी रुकबा नहि चाही। हुनक मानब अछि जे इंडस्टरीकेँ बाहर बहुत नीक नीक आवाज बला गायक सभ छथि ।

बीपी, हार्ड प्रोब्लेम, सुगर, गठिया, शारीरक कोनो अंगक जोड़क दर्द, बबासीर, एनीमिया, शरीरमे खूनक नहि बननाइ, कमजोरी आदि समस्याक संग-संग **आजीवन स्वास्थ्य आ सुन्दरता** प्राप्ति हेतु सम्पर्क करी -

मो0+91-9212-46-1006

नोट- आयुर्वेदपर आधारित, दुनियाँक सर्वश्रेस्थ 5 टा प्रयोगशालासँ प्रमाणित स्ह्यबिना कोनो साइड इफेक्टकेँ।

MD, MS, MDS, MBBS, B.Tech, BBA & MBA

ALL OVER INDIA PRIVATE COLLEGES MANAGEMENT & NRI QUOTA ADMISSION ASSISTANCE

CONFIRM SEATS WITH 100% ASSURANCE

R.Thakur +91 9311013355

Office : 44F/9, 1st Floor, Rajendra Complex, Kishangarh, Vasantkunj, New Delhi - 110070

सतास्यता फार्म हमरा मिथिलांचल टुंटडे के सदस्याता चाही

नाम.....पता.....
.

फोन/मोबाईज नं. .....चैक/ड्राफ्ट संख्या.....दिनांक.....

द्वाराड **Mithilanchaltoday** के नामे पठा रहल छी जाकर भुगतान **DELHI** में हैत।

वार्षिक सदस्यता के चेन्हे लगाऊ

अप्पन सदस्यता फार्म एहि पाता पर पठाबी

भारत नेपाल विदेश

रू. 150/- रू. 250/- **US$25**

:- संपादकीय कार्यालय :-

B-2/333,Tara Nagar,Old Palam Road Kakrola,
Sec-15 Dwarka, New delhi-110078.(INDIA)
Phpnes : 011-6585937, 32670787
Fax : 011-253335034

For Online Payment please depodit in
SBI A/c No.: 32312430636(ifsc code-SBIN006815)

विज्ञापन

मिथिलांचल टुडे हिनका लोकनि लग उपलब्ध अछि।

पटना

विद्यायानन्द सिंह- **887756577**
बी. के. राय-**9304046154**
शिव पुस्तक भंडार-**9905281145**

दरभंगा

प्रभाकर झा- **9334912721**
राज श्री ठाकुर- **9386573990**
मनोज कुमार राय 'गुड्डू'- **9470623525**
मनोरंजन कुमार- **9955777777**

मधुवनी

शिवनाथ यादव- **8102791633**
सुभेश्वर झा-**9304913085**
सोनू झा- **7677095182**

दिल्ली

बबलू मूखिया- **9958067341**
जगदानन्द झा 'मनू'- **9212461006**
राजकुमार यादव-**9958792725**
राहुल कुमार-**9899897745**
सत्येन्द्र कुमार 'योगी'- **9313248484**
नीतीश चौधर- **9136187133**
संजय शर्मा-**99991888605**
चॉंदअल-**9873099647**
शत्रुन्जयडांगी-**9990884902**

नोएड़ा

सारंगघर मुदगल- **99533786714**

गाजीयाबाद

रामअवतार झा 'रामू'-**9990049741**
प्रवण कुमार शर्मा-**9971113998**

वहादुर गढ़ 'हरियाणा'

मदनलाल-**8059855817**

गुडगॉवाँ

राजीव रंजन-**9311564306**

मुंबई

पंकज झा- **9230405164**

कोलकाता

अनमोल झा- **9433753863**

वोकारो

राजीव इठाकुर-**7856033533**

छत्तीसगढ़

मनोज मिश्रा-**9826231240**
रायपुर- चुदन झा-**9755027749**

नेपाल

विनीत ठाकुर-**977-9841563408**

A P W

Amit : 9883578553
Parbhash : 9999166581

Amit Plumber Works

Plumber Engineering Works, Bathroom, kitchen, Sever, Water Connection, Fancy Fitting etc.

A-108, Gali No.8, Jagta Puri, Delhi-08

कांग्रेस का हाथ
आम आदमी के साथ
श्री कपिल सिब्बल
चाँदनी चौक
श्रीमती कृष्णा तीरथ
उत्तर पश्चिम
श्री अजय माकन
नई दिल्ली
श्री संदीप दीक्षित
पूर्वी दिल्ली
श्री महाबल मिश्रा
पश्चिमी दिल्ली
श्री रमेश कुमार
दक्षिणी दिल्ली
श्री अरविन्दर सिंह (लवली)
(एम.एल.ए)
देश का विकास
कांग्रेस के साथ
समस्त देशवासियों को
होली
की हार्दिक शुभकामनाऐं
बुन्दू सैफी
(सचिव दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी)
9718266262
9350568835
9810178644
9350242704

RNI NO. DEL MAI/2012/45339

CIN: U72300BR2011PTC017466

Nerve Technology

Nerves of Technology

अपने व्यापार/प्रति ठान को दिजीये नई तकनीकी प्रणाली!
बचाये समय, पैसा और मेहनत साथ ही बढ़ाये अपने व्यापार को।

Our Services: Software Development(billing, stock and accounting, etc.),
Website Development(online ERP, eCommerce, etc.),
Job Consultacy(Job for unemployeement) and all type of technical support.

Corporate Office: Nerve Technology Pvt. Ltd.
Nayak Shopping Complex, Near Telephone Exchange,Madhubani, Bihar 847211
Call: **06276222238, 09308224554,09608785378, 09334466755**
Email: nervetechnology@gmail.com, info@nervetech.com
Website: www.nervetech.com